वर्ष-2022 अंक-19

सर्वेक्षण दर्पण

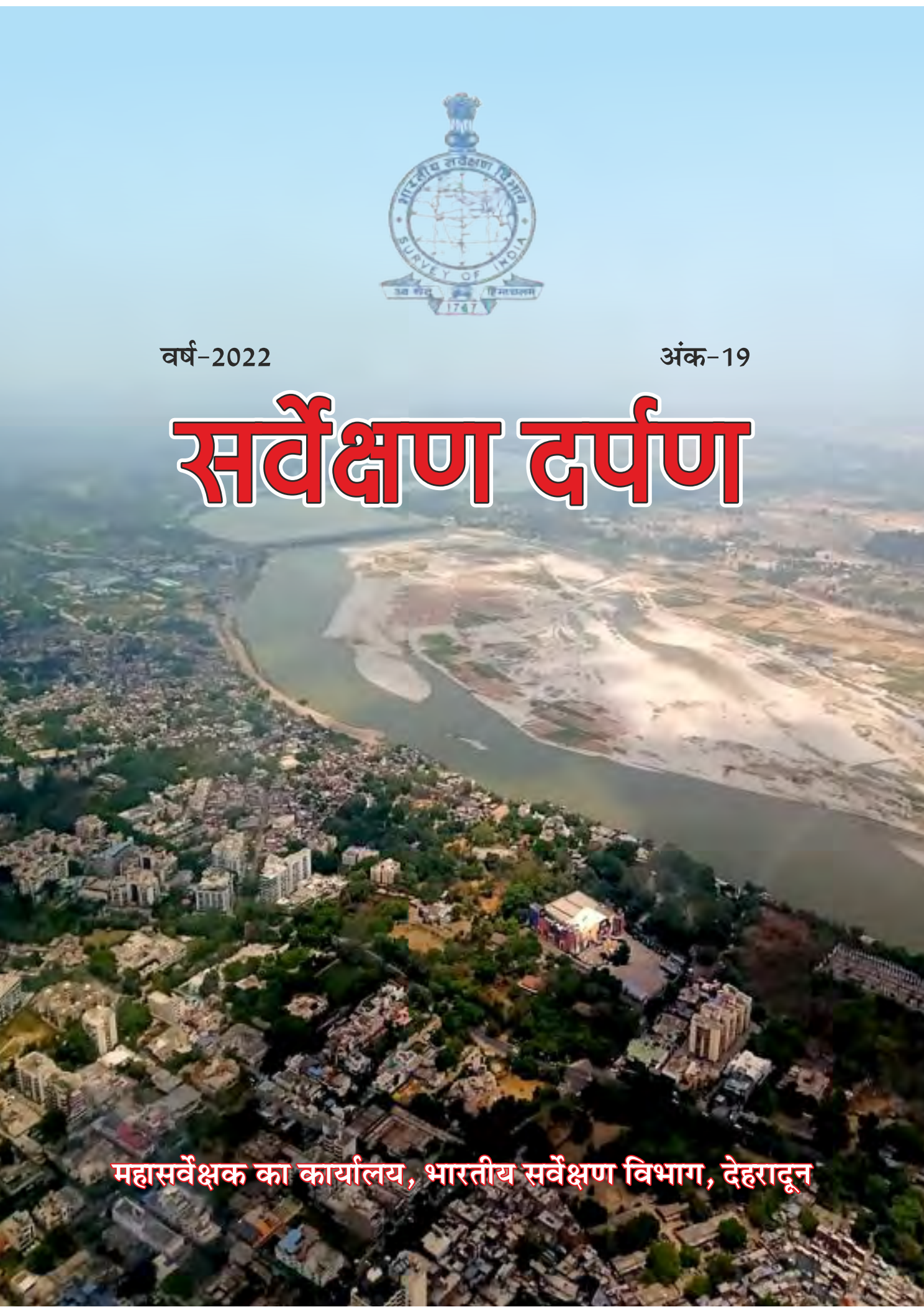

महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग, देहरादून

श्री जितेन्द्र सिंह जी, माननीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय,
भारत सरकार का महासर्वेक्षक कार्यालय में आगमन।

माननीय मंत्री जी (स्वतंत्र प्रभार) पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, विज्ञान और
प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार को श्री नवीन तोमर,
अपर महासर्वेक्षक मानचित्र भेंट करते हुए ।

सर्वेक्षण दर्पण

वर्ष—2022 अंक— 19

संरक्षक

सुनील कुमार
भारत के महासर्वेक्षक

परामर्श

प्रशान्त कुमार
उप महासर्वेक्षक एवं सम्पर्क अधिकारी (रा0भा0)

संपादक

उपकार पाठक
अधीक्षक सर्वेक्षक एवं प्रभारी (रा0भा0)

संपादन सहयोग

सरोज बलूनी, के0 एस0 नेगी, शान्ति प्रकाश,
नीलम जौनवाल, जसवीर सिंह।

✷ सम्पर्क सूत्र ✷
महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग
डाक बाक्स सं0—37 हाथीबड़कला एस्टेट देहरादून—248001 (उत्तराखण्ड)।

हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश

अनुच्छेद – 351

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भण्ड़ार के लिए मुख्यतः संस्कृत से और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करें।

पत्रिका ''सर्वेक्षण दर्पण'' अंक–19 में व्यक्त विचार लेखकों के निजि विचार हैं।
संपादक मण्डल अथवा भारतीय सर्वेक्षण विभाग उनसे सहमत होने के लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।
रचना की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होगा।

श्री सुनील कुमार
भा.व.से.
Sunil Kumar
I.F.S.
भारत के महासर्वेक्षक
Surveyor General of India

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय,
हाथीबड़कला एस्टेट, पोस्ट बॉक्स नं० 37,
देहरादून –248001 (उत्तराखण्ड), भारत
SURVEY OF INDIA
Surveyor General's Office,
Hathibarkala Estate, Post Box No. – 37,
Dehradun –248001, (Uttarakhand), India.

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपने विभाग की हिन्दी गृह-पत्रिका सर्वेक्षण दर्पण अंक-19 का प्रकाशन कर रहा है।

हिन्दी वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर सर्वाधिक बोली जाने वाली एवं संप्रेषणीय भाषा रही है साथ ही राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सहेज कर रखने में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिन्दी भाषा संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा सर्वेक्षण के नए तकनीकी कार्य, सूचना प्रौद्योगिकी आदि में हो रहे कार्यों की नवीनतम जानकारियां हिन्दी के माध्यम से जन साधारण तक सुगमता से पहुंच रही हैं। हिन्दी भाषा विचारों की सहज एवं सार्थक संवाहक है। यह जितनी सरल, सहज और प्रयोजनमूलक होगी उतनी ही अधिक कारगर साबित होगी। मैं आशा करता हूं कि पत्रिका का यह अंक रोचक जानकारियों से परिपूर्ण होगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को बधाई एवं पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

(सुनील कुमार)
संयुक्त सचिव एवं
भारत के महासर्वेक्षक।

Tel: 00-91-135-2744268/2747051-58 Extn-5001
E-mail : sgi.soi@gov.in

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी गृह पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" अंक–19 का प्रकाशन कर रहा है। मेरी दृष्टि में ऐसे प्रकाशनों के माध्यम से देश की राजभाषा का गौरव ही नहीं बढ़ता बल्कि इसकी रचनाओं के जरिऐ ज्ञानवर्धक जानकारियां भी मिलती हैं।

हिन्दी का महत्त्व केवल राजभाषा में ही नहीं, बल्कि जनभाषा के रूप में सर्वोपरि है। भारत जैसे बहुभाषी देश में हिन्दी क्षेत्रीय भाषाओं के मध्य सेतु का कार्य कर देश को एकता के सूत्र में पिरोने में अतुलनीय भूमिका निभाती रही है। यह गर्व का विषय है कि राजभाषा हिन्दी आज विश्व में भी अपनी लोकप्रियता का परचम लहरा रही है। अतः राजभाषा हिन्दी को समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए हम सबका सक्रिय योगदान बहुत आवश्यक है।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित करता हूँ ।

(प्रशान्त कुमार)
उप महासर्वेक्षक एवं
हिन्दी संम्पर्क अधिकारी
महासर्वेक्षक का कार्यालय

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग,
क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2)
-- x --

302,सी.जी.ओ.भवन-1, कमला नेहरू नगर
गाजियाबाद-201002 दूरभाष/फैक्स-0120-2719356
ई-मेल- rionorthgzb@gmail.com

फा.सं.-क्षे.का.का.उ./पत्रिका-संदेश/241 दिनांक -18/08/2022

संदेश

अत यंत हर्ष का विषय है कि भारत के महासर्वेक्षक का कार्यालय, भारतीय सर्वेक्षण विभाग अपनी वार्षिक हिन दी गृह पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" - अंक 19 का प्रकाशन करने जा रही है । मुझे पूरा विश वास है कि "सर्वेक्षण दर्पण" का यह अंक भी राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा । पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों एवं संपादक मण डल को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(निर्मल कुमार दुबे)
सहायक निदेशक (कार्यान वयन) एवं कार्यालयाध्यक्ष

संपादकीय

महासर्वेक्षक कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "सर्वेक्षण दर्पण" अंक–19 को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए बहुत हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका के संकलन के दौरान भारतीय सर्वेक्षण विभाग परिवार के सदस्यों की साहित्यिक प्रतिभा देखकर मन प्रफुल्लित हो उठा। पत्रिका के इस अंक में बहुआयामी रचनाएं देखने को मिलेंगी। गैर–हिन्दीभाषी क्षेत्र के रचनाकारों का योगदान काफी सराहनीय एवं प्रेरणादायक रहा ।

पत्र–पत्रिकाएं समाज के बीच का संबंध जोड़ने तथा विभिन्न विषयों से साक्षातकार कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। पत्रिकाए वह दर्पण है जो वैश्विक जानकारियों से जन सामान्य का ज्ञानवर्धन करती हैं। विज्ञान ने तकनीकी क्षेत्र में अकल्पनीय प्रगति की है तथा संचार माध्यम के द्वारा विकसित और अविकसित के बीच की दूरी समाप्त सी हो गई है। पत्र–पत्रिकाएं तथा महत्वपूर्ण पुस्तकें भी आज सुगम रूप से उपलब्ध हैं। फिर भी पाठक पठनीय सामग्री को भौतिक रूप से अपने हाथों में लेना चाहता है। शायद यही कारण है कि पुस्तकें पूर्व की भांति आज भी उसी प्रकार मूल्यवान बनी हुई हैं और उनकी लोकप्रियता तथा गुणवत्ता पर कोई असर दिखाई नहीं देता। किसी भी विद्वान से पूछा जाए तो वह आज भी पत्र–पत्रिकाओं को वास्तविक रुप में ही स्वीकार करना चाहते हैं। विगत दो वर्षों से कोरोना वैश्विक महामारी को देखते हुए हमने भी दो अंक ऑनलाइन ही निकाले किन्तु कोरोना महामारी से निजात पाने के बाद पुनः भौतिक रूप में प्रिन्ट पत्रिका प्रकाशित कर आपके हाथों में सौंप रहे हैं।

आशा है कि पत्रिका के अगले अंक में और भी बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया जाएगा। पत्रिका को अधिक रोचक एवं उपयोगी बनाने के लिए सभी सुधी पाठकों के अनमोल सुझावों का इन्तजार रहेगा ।

(उपकार पाठक)
अधीक्षक सर्वेक्षक (प्रभारी रा0भा0)
महासर्वेक्षक का कार्यालय ।

अनुक्रमणिका

क्र0 सं0	लेख / रचनाएं	लेखक / रचनाकार	पृष्ठ सं0
1.	ऑफिस में हुई घटना बचपन की याद दिलाती है	बिन्दु मंघाट	8
2.	पैसा	सुरेश चन्द्र मीणा	10
3.	जननी	भ्रमण ज्योति	11
4.	कहानी	इकरार अहमद	12
5.	पहाड़	विकास शर्मा	15
6.	19 वीं सदी के महान भारतीय सर्वेक्षकों की गाथा	कौशल किशोर शुक्ला	16
7.	धीरे धीरे एक एक शब्द	नवीन कुमार	22
8.	श्रृद्धांजलि	देवेन्द्र सिंह नेगी 'अमन'	23
9.	वक़्त को विराम दूं	स्वर्णिमा बाजपेयी	24
10.	कोरोना वायरस	देवेन्द्र कुमार	25
11.	चार लाइनें	श्रीमती राजश्री भट्ट	26
12.	मानवता अभी जिंदा है	एम.पी. मण्डल	27
13.	मेरे सपनों का भारत	बी0 देव चंदर	29
14.	मालिक बाबा	शुभेश कुमार	30
15.	हिन्दी	राजेश रंजन	34
16.	पहाड़ से पलायन	सुनील कुमार रतूड़ी	35
17.	काली स्याही / आत्मदर्पण	कृष्ण कुमार खरवार 'कृष'	36
18.	अनमोल सीख	सीमा सिंह	37
19.	एक भारत श्रेष्ठ भारत	स्वीटी मंगल	40
20.	मेरी प्यारी ब्रोकली	नरेश कुमार	41
21.	है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का	सुल्तान शाह	44
22.	सच्ची प्रीत	राकेश कुमार	46
23.	ऐतिहासिक झण्डा साहिब मेला	एच एस बिष्ट	47
24.	फूल की गाथा	महेश कुमार नेगी (साभार)	50
25.	विकास का आम आदमी पर प्रभाव	नरेश कुमार	51
26.	हिंदी का सम्मान	राजेश कुमार वर्मा ,	53
27.	चौपाल का पीपल	शान्ति प्रकाश 'जिज्ञासु'	55
28.	महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिर्पोट।	श्रीमती सरोज बलूनी	59
29.	हिन्दी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन		61
30.	विभिन्न गतिविधियों की झलकियां		63

ऑफिस में हुई घटना बचपन की याद दिलाती है

बिन्दु मंघाट
निदेशक, हिमाचल प्रदेश भू–स्था0आं0 केन्द्र
उत्तरी क्षेत्र, चण्डीगढ़

यह सन् 1980 की बात है। मैं एक संयुक्त परिवार में सबसे बड़ी बच्ची थी। मेरे बाद के सभी बच्चे 06–10 साल के बीच थे। सन् 1986 में गल्फ से हमारे मामाजी ने घर में पहला टी.वी.(तोशिबा) वी.सी.डी. प्लेयर के साथ लाया था। परिवार में सबसे बड़ी बच्ची होने के कारण हर काम में मुझे बुलाया जाता था। टी.वी. आने के बाद उसको चलाना, अंटीना ठीक करना, वी.सी.डी. प्लेयर में कैसेट डालकर सिनेमा दिखाना– ऐसे सारे काम मेरी ड्यूटी में आया। अंटीना ठीक करने की बात को सोचकर अभी भी बहुत हंसी आती है। एक आदमी छत के मुंडेर (पैरापेड) के ऊपर खड़े होकर अंटीना को हिलाएगा और दूसरा नीचे टी.वी. देखकर इशारा देगा। ये सब प्रक्रिया अगली हवा आने तक की होती थी, फिर वही हाल। टी.वी. देखने के लिए दर्शक कम थे। शुरू में केवल नैशनल चैनल आते थे, रीजनल चैनल केवल एक घण्टे के लिए आते थे। मुझे हिन्दी कुछ भी समझ नहीं आती थी, फिर भी मैं सारा प्रोग्राम देखती थी। पहले दिन टी.वी. ऑन होते ही कृषि दर्शन प्रोग्राम चलता था। बुनियाद सीरीयल आता था। देख–देख कर कुछ–कुछ हिन्दी समझ में आनी शुरू हो गई।

मामाजी को मेरे ऊपर बहुत भरोसा था। उन दिनों घर में दिनभर सिनेमा चलता रहता था। बीच–बीच में वी.सी.डी. प्लेयर में कैसेट फंस जाना शुरू हो गया, तब मामाजी वी. सी.डी. प्लेयर खोलकर कैसेट निकालते थे और हेड को स्पिरिट से साफ करते थे। उस वक्त मैं मामाजी की हेल्पर बन जाती थी और जो सामान लेके आने के लिए बोलते वो फटाफट लेकर देती। ऐसे देखते–देखते मैं भी वी.सी.डी. प्लेयर को क्लीन करना सीख गई।

मामाजी के एक महीने की छुट्टी खत्म होने पर गल्फ वापस जाने का समय आया, तब मुझे वी.सी.डी. प्लेयर संभालने की जिम्मेदारी सौंपी गई। आगे बहुत बार मुझे वी.सी.डी. प्लेयर को खोलकर हेड साफ करना पड़ा। उसी समय से घर में कोई चीज खराब हो जाती तो मुझे उसको खोलकर देखने की आदत हुई। वही बचपना अब ऑफिस में काम आया।

कार्यालय में बॉयोमैट्रिक स्कैनर के साथ एक टैबलेट है, जिस पर कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी कोरोना आने से पहले तक प्रतिदिन अपनी हाजिरी लगाते थे। पिछले दो वर्षों से भारत सरकार के निर्देशानुसार इस टैबलेट के माध्यम से उपस्थिति दर्ज नहीं की गई थी। हाल ही में पुनः भारत सरकार के निर्देश पर उपस्थिति फिर से बायोमैट्रिक दर्ज की जानी थी। लेकिन दो वर्षों से इस्तेमाल नहीं हो रही टैबलेट की हालत इतनी अच्छी नहीं थी कि इस पर उपस्थिति दर्ज हो सके। इसकी बैटरी खराब हो गई थी, जिसके कारण बैक–अप भी कम था।

ऑफिस का स्टोर अनुभाग इस तरह की चीजों को देखता है। हमेशा की तरह, उन्होंने एक स्थानीय उद्यमी को कार्यालय में बुलाया और इसे काम करने की पुर्नस्थिति में लाने की कोशिश की। इसके अलावा कंपनी से भी ई–मेल द्वारा संपर्क किया था, उससे भी कामयाबी नहीं मिली। आखिर में बायोमैट्रिक हाजिरी के लिए एक नया टैबलेट खरीदने का निर्णय हुआ और ये पुरानी मशीन निलामी करने का विचार किया।

इसी बीच मुझे मशीन को खोलकर देखने का मन किया। साहब को बोलकर मैंने एक सुबह ऑफिस आते ही मशीन अपने कमरे में मंगवायी और उसके नट बोल्ट निकालकर टैबलेट और फिंगर प्रिंट स्कैनर धीरे से, लोहे के केस से बाहर निकाला। तब देखा फिंगर प्रिंट स्कैनर के पीछे एक पेपर पर पर्ची चिपकाया हुआ था और उसमें एक नम्बर लिखा था। मुझे लगा कि ये नंबर स्कैनर का सीरियल नंबर हो सकता है। मशीन के बाहर सिर्फ पी.बी.100 दर्शाया था। कार्यालय से यह भी पता चला कि कोरोना महामारी आने से पहले तक इसी मशीन द्वारा हाजिरी लगती थी, अगर ऐसा है तो इसमें आर.डी. सर्विस भी ऐक्टिव होगा। ये प्रीसिशन कंपनी की मशीन का है। इसलिए प्रीसिशन कंपनी के वेबसाईट में जाकर सीरियल नंबर की जाँच की। तब पता चला कि ये स्कैनर पी. बी.400 मॉडल है और इसमें 2018 से आर.डी. सर्विस चल रहा है। फिर कुछ यूट्यूब चैनल के मदद से स्कैनर का सॉफ्टवेयर डाउनलोड किया। एक और बात समझ में आयी कि पी.बी. 100, टैबलेट का मॉडल नंबर होता है। स्कैनर के मॉडल नंबर पी.बी.400 है और ये कंपनी ने कहीं नहीं लिखा था। स्कैनर के सॉफ्टवेयर डाउनलोड करके अपडेट कर लिया और स्कैनर की वर्किंग कन्डिशन भी चेक कर ली। स्कैनर ठीक काम कर रहा था। लेकिन स्कैनर को बायोमैट्रिक सर्विसेज में ले आने में कामयाब नहीं हुई, क्योंकि एप में रेफ्रेंस नंबर मांग रहा था। उसका पता नहीं था। प्रीसिशन को ई–मेल किया, लेकिन कोई जवाब नहीं आया।

यूट्यूब चैनल देखा– वह भी किसी रेफ्रेंस नंबर के बारे में बता नहीं पा रहा था। इस तरह एक हफ्ता निकल गया। अगले हफ्ते ऑफिस आते ही इस काम में मेरी मदद करने वाले एक ऑफिसर को बुलाकर चर्चा की। उन्होंने देहरादून स्टेशन से पदोन्नति पर हाल ही में हमारे कार्यालय में ज्वाईन किया हैं। उनके कहने पर देहरादून के सप्लायर से बात किया और उन्होंने जवाब के लिए कुछ समय मांगा। बाद में ऑफिसर के पास देहरादून के सप्लायर का फोन आया और बोला कि कुछ सॉफ्टवेयर प्राब्लम हो सकता है। फिर दो दिन का और समय मांगा।

ये सुनकर मुझे आया "यूरेका"। अभी तक मैंने टैबलेट में केवल आर.डी. सर्विसेज की साफ्टवेयर ही इंस्टॉल किया, बायोमैट्रिक अटेन्डेन्स की साफ्टवेयर कहाँ डाली ? इसी प्रश्न में उत्तर भी था। बायोमैट्रिक वेबसाईट में लॉगिन करके सॉफ्टवेयर डाउनलोड किया और टैबलेट में इंस्टॉल किया। उसके बाद ओपन करने पर रीजन मांगा– उसमें दिल्ली एन.सी. आर. लेना था, फिर महासर्वेक्षक कार्यालय से ऐक्टीविशन आई.डी. की मांग की और मशीन को एक्टीवेट किया। उस रात मुझे अच्छी नींद आई जो पिछले 10 दिनों से नहीं आ रही थी। मुझे पता है कि ये काम कोई बड़ा काम नहीं है, लेकिन इसकी सफलता से मुझे बहुत खुशी मिली। शायद मेरे सहयोगी ऑफिसर को भी खुशी मिली होगी, क्योंकि मैं उनको बार–बार कुछ न कुछ पूछ–ताछ करके 10 दिनों तक तंग किया था।

पैसा

सुरेश चन्द्र मीणा
एम0टी0एस0
जम्मू एवं कश्मीर भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, जम्मू

वाह रे पैसा
तेरे कितने नाम ?
मंदिर में दिया जाए तो
चढ़ावा
स्कूल में दिया जाए तो
फीस
शादी मे दे दो तो
दहेज
तलाक देन पर दिया जाय तो
गुज़ारा भत्ता
आप किसी को दो तो
कर्ज
अदालत में दो तो
जुर्माना ❑

जननी

–भ्रमण ज्योति
एम. टी. एस.
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

लख लख धन्यवाद उस जननी का
जिसने मुझे है जना।
मुझे बस बेटा कहने से ही उसका सीना है हमेशा तना।
तन बगैर आभूषण
मन में जो आभूषण पाई थी।
मुझे ही अपना आभूषण मान ,
बार बार उल्लासित हुई मेरी माई थी।
पथ पथ था ठोकर तो माई मुझे संभाली थी,
कभी सरस्वती बन मुझे ज्ञान दिया,
तो कभी सही राह दिखाने को बनी काली थी ।
जो काज किया मैंने
जीवन में हर काज में मां तेरा समर्थन था।
पर तुझे पता था, क्या सही है, क्या गलत है,
तो तेरे भीतर भी
एक अलग सा समुद्र मंथन था ।
विष पाया तो तूने मां
शिव बन विष का भी पान किया ।
अमृत पाया जो तूने मां
तो मुझे देव बना अमृत्व का दान दिया ।
आज हूं तुझ से दूर मां, हूं कुछ मजबूर मां ।
खाना खाया, पानी पिया
आज भी तेरे वहीं पुराने सवाल हैं।
कैसे कर लेती हो मां
तू भी बस कमाल है ।
मां अगर मैं, बारिश की बूंद हूं

तो तुम मेरी बादल हो,
तेरे रोज के सवालों से चिढ़कर मैं बोलता हूं ,
मेरी मां तुम एकदम बावरी हो।।

कहानी

— **इकरार अहमद**
प्रबन्धक कनिष्ठ
पश्चिम मुद्रण वर्ग, पालम दिल्ली

जावेद गरीब मां बाप का बेटा था, गरीबी में दिन काट कर उसके मां बाप उसे पढ़ा रहे थे। जावेद भाइयों में छोटा था और पढ़ने में ठीक था, इसलिए उसके घरवालों ने उसकी पढ़ाई को जारी रखा। इंटर की पढ़ाई पूरी करने के बाद आगे की पढ़ाई के लिए उसे शहर जाना पड़ा । उसकी हिम्मत दे खकर घर के लोग भी हर मदद को तैयार थे नतीजन जावेद शहर पहुंच गया।

जावेद हास्टल में रहता था और दिल लगाकर पढ़ाई करता था वह हास्टल में अलग किस्म का लड़का था। एक के बाद एक साल बीत गया और उसकी पढ़ाई भी पूरी होती गई। उसका एक जिगरी दोस्त था अनिल, जो उसका हमराज भी था। जावेद की पढ़ाई पूरी होते ही उसको उसी शहर में एक छोटी सी नौकरी मिल गई अनिल प्रशासनिक सेवा के लिए तैयारी कर रहा था नौकरी मिलने के बाद जावेद ने वहीं नजदीक मौहल्ले में किराये पर घर ले लिया जहां अनिल रहता था। हर एक दुख सुख में अनिल जावेद का और जावेद अनिल का साथ देता था। रमजान का महीना था जावेद आफिस से आकर इफ्तारी का इन्तजार करता था मोहल्ले वाले भी इफ्तारी दे जाते थे। जावेद और अनिल दोनों एक साथ इफ्तारी करते थे। अलविदा की नमाज पढ़ कर जावेद अपने गांव ईद मनाने चला गया। लौट कर जब वापस आया तो उसको पता चला कि अपने रूम/कमरे के सामने खाली जगह पर मकान बनने जा रहा है। हम लोग बहुत खुश हुए कि एक नया मकान बन जाएगा तो हम लोग इस नये मकान को किराये पर ले लेंगे।

मकान बनाने वाले मुस्लिम परिवार से थे। उनका एक छोटा बेटा और दो बेटियां थी। जावेद का आफिस दोपहर की शिफ्ट से शुरू होता था। अतः सुबह से दोपहर तक घर पर रहने से नये मालिक से अच्छी जान पहचान हो गयी और सलाम दुआ भी खूब होने लगी। मकान मालिक की बड़ी लड़की का नाम नगमा था। चूंकि उनके घर में कोई बड़ा लड़का नहीं था इसलिए सारा काम अंकल व आंटी को ही करना पड़ता था। कभी कभार जावेद भी उन लोगों का छोटा मोटा काम कर दिया करता था जावेद उस परिवार में इतना घुल मिल गया था कि वह हर तरह की घरेलू बातों को साझा कर लेता था। वे लोग भी अपनी घरेलू बातों को जावेद से साझा कर लेते थे।

एक बार अनिल कहने लगा जावेद, नगमा बहुत अच्छी लड़की है तुम चाहो तो मैं उससे तेरी शादी की बात करूं लेकिन जावेद ने मना कर दिया क्योंकि नगमा को वह बहन मानता था और उसी तरह का व्यवहार भी करता था इसलिए कभी उसने ऐसी बात नहीं

सोची। हां वह नगमा के रहन सहन तहजीव से अपने दिल में जरूर सोचने लगा था कि काश ऐसी लड़की मेरे घर में बहू बनकर आ जाए तो घर में खुशियां ही खुशियां होंगी। बहन बना कर तो जिन्दगी भर घर में नहीं रख सकता था। इसलिए वह मन में भाभी बनाने के लिए जरूर सोच रहा था लेकिन न तो वह नगमा से ही कह पाया और न अंकल आंटी से। हां मौके की तलाश में अवश्य था कि जब भी मौका मिलेगा तो उसे भाभी बनाने की बात जरूर करेगा।

अनिल उसको बार–बार यही कहता था कि जावेद अपनी शादी के लिए जैसा तुम सोचते थे ठीक वैसी ही लड़की है नगमा। क्यों नहीं बात कर लेते हो। आंटी भी यही कहती है कि कोई अच्छा सा लड़का मिल जाता तो नगमा की शादी कर देती, मकान तो बाद में भी बना जाता इसलिए मेरे दोस्त बात कर लेना ठीक है । लेकिन जावेद इस बात के लिए तैयार नहीं हुआ।

नगमा गर्मी की छुट्टियों में टेलीफोन डिपार्टमेन्ट में ट्रेनिंग कर रही थी। उसने जावेद को फोन कर कहा भैया कल अगर आपकी छुट्टी है तो यहां आ जाइऐगा तो मैं आपको ट्रेनिंग सेन्टर दिखा दूंगी जहां से देश विदेश के लिए फोन होते हैं। जावेद अगले छुट्टी के दिन ट्रेनिंग सेन्टर पर गया सेन्टर देखने के बाद जब वह नगमा के साथ बाहर निकल रहा था तो वहां नगमा का चचेरा भाई मिल गया। उसने अपने घर जाकर ऐसा गुल खिलाया कि नगमा के चाचा चाची उसके पाक साफ दामन पर कीचड़ उछालने लगे। ऐसे बहुत पुरानी सोच के लोग होते थे जो लड़की या लड़के को एक साथ जाते देख कर शको व शुबा किया करते थे। जब यह बात जावेद को पता चली तो वह बहुत परेशान हो गया रात भर रोता रहा और अपनी किस्मत को कोसता रहा कि मैं ट्रेनिंग सेन्टर पर गया ही क्यों ? या खुदाया मैं जिस लड़की को पाक नजरों से बहन मानता हूं उसके दामन पर कीचड़ क्यों उछाला गया ?

जावेद सुबह उठा तो उसकी आंखे लाल थी ऐसा लग रहा था जैसे कई दिनों से सोया नहीं है। उसकी इस हालत को देखकर अनिल ने सबब जानने की कोशिश की तो जावेद ने रोते–रोते सारी बात बता दी तब अनिल ने सलाह दी कि 'जावेद, नगमा को पाकी से बचाने का अब एक ही जरिया है कि तुम उससे शादी कर लो।' नगमा कई दिनों तक जावेद से नहीं मिली। जावेद उस पर लगाए इल्जामों सें परेशान था और मन ही मन सोचने लगा कि पाक दामन को पाक साबित करने का अनिल द्वारा सुझाया गया तरीका ही सही है कि वह नगमा से शादी कर ले। अब उसकी परेशानी यह थी कि वह कैसे कहे। वह डरता था कि कहीं ऐसा न हो कि सारे रिश्ते खतरे में पड़ जाये। चूंकि ये प्यार का मामला तो था नहीं यह तो पाक दामन को पाकी साबित करने की बात थी इसलिए जावेद चुप था अनिल ने एक सलाह दी कि जावेद एक काम करो तुम अपने घरवालों को बुला लो वे लोग बात कर लेंगें।

नगमा के चचेरे भाई के द्वारा लगाए गए इल्जामों के कारण जावेद को मजबूर किया जाने लगा कि तुम बहुत गंदे इन्सान हो यह मोहल्ला छोड़ दो। चूंकि इस हादसे के बाद जावेद नगमा को धीरे धीरे चाहने लगा था उसे इस बात का इल्म नहीं था कि नगमा भी उसे चाहती है या नहीं इसलिए वह दिल ही दिल में ठान चुका था कि उसकी पाकी के लिए वह मोहल्ला तो क्या शहर भी छोड़ देगा। जावेद रात दिन नगमा के बारे में सोचता था। बहुत दिनों से नगमा भी उससे मिली नहीं थी। हालांकि जावेद ने कई बार सोचा कि अंकल

आंटी से ही बोलकर नगमा का हाथ मांग ले लेकिन उसको इस बात का डर था कि कहीं अंकल भी उसकी पाकी पर शक न करने लगे।

वक्त के इंतजार में वह बैठा रहा कि कभी कह ही दूंगा। पल घण्टे दिन महीने गुजर गये लेकिन कभी मौका नहीं मिला। अनिल जावेद की परेशानी को समझता था पर वह कर भी क्या सकता था। अनिल ने कई बार पूछा कि जावेद अगर तुम नहीं कह सकते हो तो मैं कह देता हूं लेकिन जावेद ने कभी अनिल को भी हां नहीं किया क्योंकि अगर जवाब ना में आया तब वह जुदाई हमेशा के लिए हो जायेगी, और फिर मिलना मिलाना नहीं हो सकता था।

जावेद पहले भाभी बनाने के लिए सोच रहा था लेकिन वक्त की नजाकत ने उसे ऐसे मजबूर किया कि वह अपना फैसला बदलने को तैयार हो गया। जावेद एक दिन अनिल से बोला अनिल मैं कल यह शहर छोड़ कर जा रहा हूं। अनिल बहुत घबराया, उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि वाकई जावेद शहर छोड़ रहा है। जावेद की एक मुंह बोली बहन थी नाजो, जब उसे पता चला तो वह और उसके घर वाले खूब रोये और रोकने की कोशिश की। जावेद ने जाते वक्त एक फरियाद की, कि अनिल कोई गलती हो गयी हो तो माफ कर देना और कह देना उन लोगों से कि जावेद मोहल्ला ही नहीं पूरा शहर ही छोड़कर चला गया। जावेद के पास अनिल के खत बराबर आते रहते थे। नगमा का खत आता था। वह कई बार सोचा कि नगमा से दिल की बात कह दें लेकिन नहीं कह सका।

जावेद ने बहुत चाहा कि उस हादसे की यादें दिल से भुला दें लेकिन वह कभी भुला नहीं सका और न ही अपनी दिल की बात जाहिर कर सका। आखिर एक दिन वह भी आ गया जब खबर आई कि नगमा की सगाई हो गई तब जावेद बहुत खुश हुआ और खुदा का शुक्रिया अदा किया क्योंकि उसकी नगमा पर उछाले गये कीचड़ के दाग अब मिट गए थे फिर नगमा का एक दिन खत आया कि जावेद मेरी शादी में तुम जरूर आना लेकिन जावेद नगमा की शादी में शरीक नहीं हुआ। वह इसलिए कि वह नहीं चाहता था कि एक बार फिर वही पुरानी याद ताजा हो जाए और लोग इधर उधर की बात करें तथा एक दुल्हन के दामन में खुशियों के फूल के बजाये कांटे भर जाये।

कुछ समय बाद अनिल की भी शादी हो गयी। अनिल का अपना ख्याल था कि जावेद की शादी हो जाती तो जावेद के साथ नगमा और नगमा के साथ जावेद बहुत खुश रहते। अनिल अपने घर पर बहुत खुशी से जी रहा है। नगमा के शौहर किसी सरकारी विभाग में काम करते है। नगमा पता नहीं खुश है या नहीं ? अब खतो–व–किताबात नहीं होती है क्योंकि एक लम्बा अरसा हो गया हैं।

अब आप बताये कि जावेद ने एक बार तो नगमा को बहन बनाया फिर शादी करने का ख्याल दिल में आया क्या जावेद का ऐसा करना ठीक था ? क्या पाकी साबित करने का एक यही रास्ता बचा था शादी ? जावेद कैसा आदमी था ?

कहानी लिखने तक इतना ही मालूम हो सका कि नगमा अपने घरवालों और शौहर के साथ खुश है। अनिल अपनी पढ़ाई पूरी करके अपना पैतृक कारोबार देख रहा है पर जावेद का क्या हुआ उसका कुछ पता नहीं।❑

पहाड़

–विकास शर्मा
एम. टी. एस.
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

वे हमेशा से आते थे मेरे सपनों में
भेड़ के सीगों की तरह
घुमावदार और निर्दोष
मगर संसार की सबसे बड़ी चुनौती
शायद पहाड़ ही रहे होंगे

उनके बड़े होने में क्या रहस्य है,
आज तक कोई नहीं जानता सिर्फ उनकी
रोएं की तरह फैले देवदार और
चीड़ को छोड़कर

लोग कहते है पहाड़ बोलते नहीं
जनवरी में आकाश से सफेद मिट्टी के गिरने
पर मैंने उनको गाते हुए सुना है
मार्च में बसंत को बुलाते हुए वे
अक्सर भावुक हो जाते हैं

ये बातें मैं सुन रहा था
एक दिन अपनी खिड़की से झांकते हुए
आम के पेड़ को सुन रही थी जमीन चुपके से
तभी एक चिट्ठी ने जोर से धक्का मारा
मेरे दरवाजे को, और
परखच्चें उड़ा दिए मेरी कहानी के

यह मेरे पिता की चिट्ठी थी ऊपर से
दिखती थी गंभीर पर प्यार की महक से
कुछ भारी हो गई थी उठाने में

हर एक शब्द लगता था
सिकुआ के वृक्ष सा ऊंचा
वाक्यों के बीच थीं कुछ खाईयां
प्रेम और कठोरता को पाटने के लिए

मैंने फिर बुलाया आम को खिड़की पर
और कहा फुस–फुसाकर
मैंने नहीं देखा है कभी पहाड़ को
पर पिता को देखा है ।❑

19वीं सदी के महान भारतीय सर्वेक्षकों की गाथा

–कौशल किशोर शुक्ला
अधिकारी सर्वेक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

प्रस्तावना :–

कुशल प्रशासन, सामरिक युद्ध रणनीति एवं सतत विकास के लिए सटीक मानचित्र का होना परम आवश्यक समझा जाता है इसी सोच के साथ ब्रिटिश सरकारों ने सन 1767 में भारत एवं हिमालयी क्षेत्रों के भौगोलिक भू भाग पर अपना साम्राज्य मजबूत करने के लिए संभवतः भारतीय सर्वेक्षण विभाग की स्थापना की होगी। राजस्व वसूली से लेकर प्राकृतिक सम्पदा, भूमिगत रत्न इत्यादि की खोज हेतु मानचित्र अपनी प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के ब्रिटिश अधिकारी और उनकी गाथाएँ तो आप सभी ने सुनी होंगी। उत्तराखंड का जार्ज एवरेस्ट हाउस हो अथवा जार्ज एवरेस्ट के नाम पर माउंट एवरेस्ट शिखर हो अथवा एवरेस्ट, लैंबटोन, मकेंजी छात्रावास हो सभी नाम अंग्रेजों के सम्मान में आज अभी भारत के आजादी के बाद भी गर्व से दर्ज हैं। किन्तु कुछ ऐसे महान भारतीय सर्वेक्षकों और खोजकर्ताओं के नाम इतिहास के पन्नों मे दर्ज होकर वहीं दफन कर दिये गए ताकि अंग्रेजों के जाने के बाद भी उनकी बनाई गई नीतियां आजाद भारत में काम करती रहें।

आज मुझे पंडित नैन सिंह, पंडित किशन सिंह, मणिबूढ़ा, कल्याण सिह, राधानाथ सिकधर जैसे महान खोजकर्ता, भूगोलवेत्ता, सर्वेक्षक और गणितज्ञ जो मूलतः भारत के थे इनके जीवनवृंत, कार्यों और साहसिक यात्राओं के बारे में कुछ लिखने का सौभाग्य मिला है जिसे अपने प्रिय पाठकों तक साझा कर रहा हूँ।

पंडित नैन सिंह

नैन सिंह (रावत) का जन्म 21 अक्तूबर सन् 1830 मे ग्राम मिलम, ब्लॉक जौहर जिला पिथौरागढ़ (वर्तमान उत्तराखंड राज्य) में हुआ था। इनके पिता का नाम अमर सिंह और माता का नाम जसुली था। जब ये आठ वर्ष के थे इनकी माता का देहांत हो गया। नैन सिंह के दो सगे भाई नाम सामजंग और मगा था और एक बहन थी।

मिलम गाँव कुमाऊँ मण्डल में अल्मोड़ा के बाद दूसरा सबसे बड़ा रिहायशी कस्बा था। यहाँ से बड़ी मात्रा में भारत–तिब्बत व्यापार का मार्ग खुला हुआ था। माता–पिता के देहांत के

बाद इनके चचेरे भाई मणि (बूढ़ा) ने अपने साथ ही व्यापार क्षेत्र में काम करने हेतु प्रेरित किया। फलस्वरूप जुलाई 1851 में वे अपना पैतृक गाँव छोडकर मुंसियारी, दनपुर, बढ़न, हिमनी, जलान, ईरानी, पाना, जोशीमठ के रास्ते माणा गाँव बद्रीनाथ आ गए थे। यहाँ पर आकर वे लतादेव मारछा के घर मे रहने लगे। बाद में इनका विवाह माणा गाँव के निवासी अमरदेव मारछा की भतीजी उमती से हुआ। ससुराल मे रहना इन्हें उचित नहीं लगा और कुछ साल बाद सन 1854 में वे अपनी पत्नी को लेकर मिलम गाँव वापस आ गए। 15 अप्रैल 1854 में जब नैन सिंह 24 वर्ष की आयु में जीता जंगपांगी और वीजू धर्मसकतु के साथ भेड़, बकरियों के व्यापार हेतु भरमौर, पंजाब, हिमाचल के पहाड़ी मार्गों के रास्ते तय किया किन्तु इस दौरान खरीदे गए अधिकांश जानवरों की मृत्यु हो गई। व्यापार मे घाटा हुआ और इन्हें नए रोजगार की तलाश थी। उन दिनों ब्रिटिश सरकार की रॉयल जिओग्राफिकल सोसाइटी (आर जी एस) ने भारत में कार्यरत ईस्ट इंडिया कंपनी को सुझाव दिया कि भारत और उसके सीमांत हिमालयी क्षेत्रों का भौगोलिक मानचित्र तैयार किया जाए और इसके लिए सर्वेक्षण कार्य की शुरूआत हुई।

नैनसिंह के जीवन में एक अभूतपूर्व बदलाव उस वक्त आया जब वे फरवरी 1856 में एक काम के सिलसिले में रामनगर (उत्तराखंड) गए थे और उनकी मुलाकात तीन स्लागिंट्वीट जर्मन बंधुओं रॉबर्ट, एडोल्फ और हरमन जो पेशे से वैज्ञानिक और खोजकर्ता थे उनसे होती है। इन बंधुओं को चुम्बकत्व सर्वे हेतु तुर्किस्तान और लद्दाख जाना था, नैन सिंह के चचेरे भाई मणि इन जर्मन वैज्ञानिको के टुकड़ी सहायक थे, इनके आग्रह पर नैन सिंह ने रॉबर्ट के साथ लेह की तरफ कूच किया और सन 1856 में करगिल के रास्ते कश्मीर पहुँचकर कुछ समय वहीं कार्य किया।

नैन सिंह ने बहुत शीघ्रता से जर्मन बंधुओं से मानचित्र कला, कॅम्पास के द्वारा अक्षांश देशांतर मापन, ऊर्ध्वाधर मापन और बैरोमीटर का समुचित प्रयोग करना सीख लिया था। नैन सिंह के कार्य और व्यवहार से खुश होकर जर्मन बंधु इन्हें अपने साथ इंग्लैंड ले जाना चाहते थे किन्तु नैन सिंह ने इसे बड़ी विनम्रता से अस्वीकार कर दिया था।

सन 1856 में नैन सिंह पुनः वागेश्वर आ गए और अपने पुराने कारोबार मे लग गए । यहाँ पर पिंडर हिमनद के समीप उनकी मुलाकात एक अंग्रेज सैन्य अधिकारी कर्नल हेनेरी स्ट्रेशी से हुई। हेनेरी को नैन सिंह की कुशाग्रता और खोज अभियान की पूर्व जानकारी थी अतः उन्होने अपने मित्र कर्नल एडमंड स्मिथ जो अल्मोड़ा के शिक्षा निरीक्षक थे उनसे अनुरोध किया फलस्वरूप नैनसिंह को एक राजकीय विद्यालय में जो मिलम (जौहर) गाँव मे था सन 1859 में शिक्षक की नौकरी मिल गई। उन दिनों स्कूल मास्टर का वेतन बहुत कम होता था।

नैन सिंह को अपने घर के खर्चे चलाना मुश्किल हो गया था। अतः कर्नल स्मिथ ने उन्हें और उनके दो भाइयों कल्याण और मणि से कहा की वे सर्वे ऑफ इंडिया कार्यालय, देहरादून जाएँ और कर्नल मोण्ट्मूरी से मिलें। कर्नल मोण्ट्मूरी ने भारतीय सर्वेक्षण विभाग में इन्हे नियुक्त किया और फरवरी 1863 में पंडित नैन सिंह ने आधिकारिक तौर पर सर्वे उपकरणों का प्रशिक्षण प्राप्त करना आरंभ किया।

सन 1863 मे कर्नल मोण्ट्मूरी ने पंडित नैन सिंह को आदेश दिया की वे तिब्बत का मानचित्र तैयार करें। जनवरी 1865 में देहरादून से दल रवाना हुआ जो 13 मार्च 1865 में काठमांडू पहुंचा। उस वक्त तिब्बत एक अनजान देश हुआ करता था। नैन सिंह को तिब्बती भाषा बोलने और समझने की क्षमता पहले से थी अतः 6 सितंबर 1865 में वे तिब्बत पहुंच जाते हैं। रातुंग सिगात्से ज्ञनात्से होते हुए 10 जनवरी 1866 में वे तिब्बत के शहर लाह्सा पहुँचते हैं। सर्वे ऑफ इंडिया के किसी भी खोजकर्ता का यह तिब्बत के शहर लाह्सा पर कदम रखना पहली घटना थी। लगभग तीन माह तक नैन सिंह ने लामा के भेष में रहकर अपने यंत्रों को पोटली में छिपाकर सर्वे कार्य किया। 21 अप्रैल 1866 मे इनकी वापसी कैलाश–मानसरोवर–नीती –किंग्री – बिगरी–ला–लपथल– टोपिधुंगा–उंताधुरा दर्रों के रास्ते 29 जून 1866 को मिलम गाँव में होती है। इस दौरान पंडित नैन सिंह ने कुल 2400 किमी दूरी को कुल 18 महीनों में पैदल चलकर तय की थी। इन भयानक पर्वतीय मार्गो की समुद्र की सतह से औसत ऊंचाई करीब 3300–5300 मीटर तक थी। इस साहसिक कार्य हेतु ब्रिटिश सरकार ने उन्हें रॉयल जिओग्राफिकल सोसाइटी (लंदन) द्वारा स्वर्ण पदक प्रदान किया था।

पूर्वी हिमालय के पश्चिमी तिब्बत अभियान का मुख्य उद्देश्य वहाँ पर मौजूद सोना, नमक और बोरेक्स की खनन संपदा का पता लगाकर कच्चे माल को लाकर भारत के ब्रिटिश सरकार को सुपुर्द करना था। पंडित नैन सिंह का दूसरा अभियान 14 फरवरी सन 11873 में शुरू हुआ जिसमें बिहार के साहिबगंज से बंगाल के दार्जिलिंग–सिक्किम–ज्ञांगचे से होकर पुनः लाहसा तक पहुँच मार्ग के सर्वे कार्य को पूरा किया।

सन 1874 में भारत–तुर्किस्तान का सर्वे कार्य (1500किमी) वाया नजीबाबाद–श्रीनगर – जोशीमठ–नीती तोलीग–बोगा–दमचोक–रूडोक–खोटन– के रास्ते तय किया। तिब्बत से सोना, बोरेक्स और नमक को लाने का पता धीरे धीरे जब तिब्बत और लद्दाख के लोगों को चलने लगा तब डाकू और लुटेरे पंडित नैन सिंह की टीम को लूटने और मारने की योजना बनाने लगे। ऐसे में नैन सिंह ने भिक्षु का भेष धारण करके लाहसा से पलायन करने का इरादा किया। वापसी नवंबर 1874 में सांगपो नदी को पार करके असम के ऊपरी हिस्से के रास्ते तवांग होते हुये उसके बाद कलकत्ता होकर 11मार्च 1875 में वापस देहारादून आ गए। इस अभियान के दौरान कुल 2800 किमी की साहसिक यात्रा पूर्ण की।

लगातार उच्च हिमालयी पर्वत चोटियों, ग्लेशियरों और दर्रों से होकर पैदल रास्ता तय करके पंडित नैन सिंह का स्वास्थ्य खराब होने लगा था। इस प्रकार उन्होंने अब हिमालय के

खोज की यात्रा पर जाना बंद कर दिया। पंडित नैन सिंह ने जिस प्रकार हिमालय के जोखिम और अज्ञात मार्गों का पता लगाया वह भारतीय सर्वेक्षण विभाग के इतिहास में अतुलनीय और अद्‌भुत है। यहाँ यह उल्लेख करना उचित होगा कि अंग्रेज हुकूमत ने पंडित नैन सिंह के पश्चिमी हिमालय के चार साहसिक अभियानो को विभागीय दस्तावेज में उतना सम्मान नहीं दिया जितना कि उन्होंने अपने अंग्रेज सर्वेक्षकों के लिए लिखा है। किन्तु उन्हीं ब्रिटिश काल में हेनेरी जैसे ईमानदार इतिहासकर भी थे जिसने रॉयल जिओग्राफिकल सोसाइटी लंदन से आग्रह किया परिणामस्वरूप ब्रिटिश सरकार ने पंडित नैन सिंह को विक्टोरिया मेडल से अलंकृत किया था।

पंडित नैन सिंह का देहांत सन 1895 में गोरी नदी के तट पर मदकोट गाँव में हुआ था। स्वतंत्र भारत के भारतीय सर्वेक्षण विभाग में पंडित नैन सिंह का नाम और उनके साहसिक खोज अभियान की घटनाएँ बड़े गर्व से याद की जाती हैं।

पंडित किशन सिंह

राय बहादुर किशन सिंह रावत का जन्म सन 1850 में ग्राम मिलम जनपद पिथौरागढ़ में हुआ था किशन सिंह ने वर्ष 1878–82 के दरम्यान सर्वे आफ इंडिया द्वारा दार्जलिंग–मंगोलिया मार्ग के खोज अभियान को सफलता पूर्वक अंजाम दिया। इस अभियान से पूर्व इस क्षेत्र का सटीक मापन एवं भौगोलिक मानचित्र दुनिया को ज्ञात नहीं था। पंडित किशन सिंह 19वीं सदी के महान अन्वेषक, भूगोलवेत्ता और कुशल कार्टोग्राफर थे। एशिया के भूगोल में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। पंडित किशन सिंह सन् 1862 में एक राजकीय विद्यालय में सहायक के रूप मे नियुक्त हुए। उन्होंने दो वर्ष तक बालिका विद्यालय ग्राम मिलम में तथा एक वर्ष टी एस के गर्वयांग राजकीय विद्यालय में शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं दी थी। सन 1867 में पंडित किशन सिंह का चयन भारतीय सर्वेक्षण विभाग देहारादून में प्रशिक्षु सर्वेक्षक के तौर पर हुआ। दो वर्ष के कठिन प्रशिक्षण के उपरांत लगभग 18 वर्ष तक उन्होंने तिब्बत और मध्य एशिया के भौगोलिक क्षेत्रों का सर्वेक्षण कार्य किया। कैलाश – मानसरोवर, शिगाक्ष्चे –लाहसा उनके महत्वपूर्ण अभियान थे। दर्जिलिंग– लाहसा – मंगोलिया अभियान (1878–1882) उनके प्रमुख अभियानो में से एक था। पंडित किशन सिंह ने देहारादून स्थित भारतीय सर्वेक्षण विभाग में बतौर प्रशिक्षक के रूप

मे अपनी सेवाएँ दीं। सन 1885 में वे भारतीय सर्वेक्षण विभाग से सेवनिवृत हुए थे। उनके अदम्य साहसिक सर्वे अभियान से प्रसन्न होकर ब्रिटिश भारतीय सरकार ने जनपद सीतापुर (उत्तर प्रदेश) में जागीर प्रदान की जिसकी सालाना राजस्व रुपया 1850 थी पेरिस जिओग्राफिकल सोसाइटी ने उन्हें स्वर्ण पदक से नवाजा था। इटालियन जिओग्राफिकल सोसाइटी ने भी उन्हें स्वर्ण पदक से अलंकृत किया था। ब्रिटिश सरकार ने उन्हें "राय बहादुर" की उपाधि देकर सम्मानित किया था।

सेवानिवृत होने के बाद पंडित किशन सिंह अपने पैतृक निवास स्थान मिलम (जौहार) आकर ग्रामीण लोगों की सामाजिक और आर्थिक मदद करने में जुट गए और जौहर – ग्रामीण विकास कार्यों में सक्रियता से जुड़े रहे। सन 1913 में उन्हें जौहर 'उपकारिणी' महासभा का संरक्षक बनाया गया। पंडित किशन सिंह का देहांत फरवरी 1921 में हुआ था। पंडित किशन सिंह के मरणोपरांत` भारतीय अन्वेषक और खोजकर्ता का सूरज अस्त हो गया।

राधानाथ सिकधर

विश्व की सर्वोच्च शिखर के ऊंचाई के गणनाकर्ता एवं महान गणितज्ञ। राधानाथ

सिकधर का जन्म अक्तूबर 1813 में कोलकाता के जोरसोको नामक स्थान पर एक बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम तूतीराम था। राधानाथ की तीन बहनें और दो सगे भाई थे। राधा नाथ जी ने विवाह नहीं किया था। इनकी आरंभिक शिक्षा गाँव के ही राजकीय विद्यालय में हुई थी। बाद में इनका दाखिला सन 1824 में हिन्दू कालेज (वर्तमान में प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय) में हुआ। हिन्दू कालेज में गणित संकाय के मशहूर प्रोफेसर ट्यटेलर के सानिध्य में राधानाथ ने गणित और भौतिकी विषय मे निपुणता हासिल की। न्यूटन के गणितीय–भौतिकी सिद्धांत में राधानाथ का कोई मुकाबला नहीं था। राधा नाथ ने अँग्रेजी, संस्कृत और दर्शनशास्त्र विषयों में भी ज्ञान प्राप्त किया। ग्रीक और लेटिन भाषा की भी उन्हें समान्य जानकारी थी। कर्नल विलियम लंबटन के बाद जार्ज एवरेस्ट ने सन 1830 में जब

सर्वेयर जनरल का पद संभाला तभी उन्होंने भारतीय सर्वेक्षण विभाग को दो भागो में विभाजित किया। पहला भाग सर्वेक्षण कार्य और दूसरा था गणना कार्य। प्रेक्षण कार्य साहसिक किन्तु उतना जटिल नहीं था जितना कि गणना के उपरांत सटीक नतीजों की प्राप्ति को परिणाम के तौर पर स्वीकारा इसके लिए जटिल गणितीय सिद्धांत और उच्च स्तर का भौतिकी और नक्षत्र विज्ञान का विशेष ज्ञान होना जरूरी है।

सर जार्ज एवरेस्ट ने इसके लिए हिन्दू कालेज को पत्र लिखा और अनुरोध किया कि उनके विभाग को मेधावी छात्र जो गणित और विज्ञान मे योग्यता रखते हों उनके नाम भेजे जाएँ। प्रोफेसर त्यटलर ने कुल आठ नाम भेजे जिसमें राधानाथ सिकदर सबसे उपयुक्त साबित हुए। 19 दिसंबर 1834 में राधानाथ सिकघर ने ग्रेट त्रिगोनोमेट्रिकल सर्वे आफ इंडिया (जी टी एस) कोलकाता मुख्यालय में नौकरी प्राप्त की।

राधानाथ वे प्रथम भारतीय थे जिन्हें (जी0टी0एस0) शाखा में नौकरी करने का अवसर मिला। सन 1832 में राधानाथ सिकदर ने एवरेस्ट के साथ देहरादून प्रवर्तन कार्यालय में कार्य करना आरंभ किया। राधानाथ की मदद से जार्ज एवरेस्ट ने करीब 1400 किमी भूमि (बिदर से मसूरी) का मापन किया। सन 1851 में राधानाथ सिकधर की मुख्य संगणक (चीफ कम्प्यूटर) पद पर पदोन्नति हुई और उन्हे कोलकाता भेजा गया। कोलकाता जाने के बाद उन्हें मौसम विभाग के अधीक्षक पद पर अतिरिक्त कार्यभार भी सौंपा गया। यह कार्यालय भी सर्वे आफ इंडिया कोलकाता परिसर में हुआ करता था। जीटीएस गणना कार्य के साथ ही उन्होंने अपने वैज्ञानिक शोध के जरिये मौसम विज्ञान के रूख को समझने में महत्वपूर्ण उपकरणों और सिद्धांतों का व्यापक प्रयोग किया जिसके आधार पर मौसम विभाग को नई दिशा मिली।

जार्ज एवरेस्ट के इंग्लैंड चले जाने के बाद कर्नल एंड्रू स्कॉट वौघ ने भारत के महासर्वेक्षक पद का कार्यभार संभाला। एंड्रू एक कूटनीतिज्ञ और अहंकारी स्वभाव का ब्रिटिश महासर्वेक्षक था। वह बाबू राधानाथ सिकधर की विद्वता से ईर्ष्या करता था और चोटी संख्या VX के गणना कार्य से उन्हें हटा कर "जे ओ निकोलस और जॉन हेनेसी "(1845–1850) नामक दो अंग्रेज सर्वेक्षकों को उच्च हिमालयी शिखरों के प्रेक्षण कार्य हेतु अपनी अगुवाई में दुबारा भेजा और VX शिखर कि ऊंचाई को मापने कि गणना करने को कहा। निकोलस और हेनेसी को पता था कि दुनियाँ कि सबसे ऊंची शिखर के जटिल वैज्ञानिक गणना एवं विश्लेषण कार्य सिर्फ राधानाथ ही कर सकते हैं अतः उनके अनुरोध पर एंड्रू वाग ने राधानाथ सिकधर को आदेश दिया कि वे इस काम को परिणाम तक ले जाएँ। बाबू राधानाथ ने शिखर VX के ऊंचाई की सटीक वैज्ञानिक गणना विभिन्न छह सर्वे स्टेशन के प्रेक्षणों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर की और इसकी ऊंचाई 29000 फिट का सफल आंकलन किया। एंड्रू ने इसे अपना नाम देने के लिए 2 फिट ऊंचाई और जोड़ी और शिखर एक्स.वी. की ऊंचाई 29002 फिट बताई। बंगाल सर्वे के जनरल रिपोर्ट 1851–54तक मे राधानाथ सिकधर के नाम का जिक्र नहीं किया गया। जब यह बात राधानाथ सिकधर जी को पता चली तो उन्होंने महासर्वेक्षक एंड्रू वाग को निवेदन पत्र लिखा और अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए उन्हें शिखर की गणना को याद दिलाया किन्तु एंड्रू ने यह कहते हुए राधानाथ के योगदान को नकार दिया की राधानाथ

हिमालय चोटी पर कभी प्रेक्षण करने गए ही नहीं उन्होंने सिर्फ ऊंचाई की गणना की थी इसलिए उनको माउंट एवरेस्ट खोज का श्रेय दिया जाना उचित नहीं है।

इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है की एंड्रू जैसे अंग्रेज महासर्वेक्षक और शासक ने एक महान भारतीय गणितज्ञ और शोधकर्ता को हतोत्साहित करने का काम किया था। ऐसे और भी भारतीय शोधकर्ता होंगे जिनके नाम और भारतीय विज्ञान में योगदान को खोजने की परम आवश्यकता है। इतना ही नहीं एंड्रू वाग ने विश्व की ऊंची शिखर के नामकरण को लेकर भी नेपाल, तिब्बत भारत और चीन के स्थानीय नामों को अस्वीकार करते हुए शिखर vx को अपने दलील और पद के बल पर गौरीशिखर अथवा देवधुड़गा नामक चोटी को माउन्ट एवरेस्ट नाम दे दिया। जब यह बात सर जार्ज एवरेस्ट को पता चली तो उन्होंने कहा कि इसका नाम एवरेस्ट न होकर स्थानीय नाम अगर रखा जाता तो उचित होगा। एंड्रू वाग के प्रभाव के सामने किसी की बात नहीं सुनी गई और अंततः विश्व के मानचित्र पर माउन्ट एवरेस्ट को दर्ज कराने में वह सफल रहा।

राधानाथ सिकधर ने भारतीय सर्वेक्षण विभाग के अनेक गणितीय गणनाओं पर पुस्तकें और अध्याय लिखे थे जो आज भी प्रासांगिग है। सही अर्थों मे राधानाथ सिकधर आधुनिक भारत के इतिहास में एक महान वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे वे जीवन पर्यन्त तक गणित के क्षेत्र में कार्य करते हुये अंत में मात्र 57 वर्ष की आयु मे गोंडलपाड़ा चन्दन नगर (हुगली) पश्चिम बंगाल से इस दुनिया को अलविदा कह गए। ❑

धीरे धीरे एक एक शब्द

नवीन कुमार
दफ्तरी
जम्मू एवं कश्मीर भू–स्था0 आं0 केन्द्र, जम्मू

आंसू जता देते हैं दर्द कैसा है ?
बेरुखी बता देती है हमदर्द कैसा है ?
धमण्ड बता देता है पैसा कितना है ?
संस्कार बता देते हैं परिवार कैसा है ?
बोली बता देती है इंसान कैसा है ?
बहस बता देती है ज्ञान कैसा है ?

श्रद्धांजलि

–देवेन्द्र सिंह नेगी 'अमन'
मानचित्रकार ग्रेड– 1
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

दूर गगन में
चमकता था, दमकता था
तारा एक वेग से, टूट गया क्षण में
मैं मौन हूं !
भूल गया आज
कौन हूं ?
स्तब्ध कर गया, निर्मम आकाश सारा
राख से भर गया।
घाव गंभीर देकर, समय ठहर गया
शून्य एक बड़ा सा, भीतर उतर गया।
संतप्त लेखनी, छलनी हृदय
सूखे अधर, भीगे नयन
वेदना गहरी ऐसी,
सही ना जाए, कही ना जाए।
पर किस भोर की
यहां सांझ नहीं होती,
धन्य धरा ऐसी, कोख जिसकी,
बांझ नहीं होती।
जो सोचता है, भर गए वो!
सुन ले जयकारों को
पवन में गूंजते नारों को
वीरों के सम्मान की जब
घड़ी होती है,
मार्ग के दोनों ओर, हाथ जोड़े
भीड़ खड़ी होती है
घट–घट में पीड़ा, जन–जन के
अश्रु कौन रोक पाता है?
कण–कण इस भूमि का,
यशगान तुम्हारा गाता है
हे माटी के अमर सपूतों!
अमरत्व स्वर्ग तुम पर लुटाता है।❑

वक़्त को विराम दूं

—स्वर्णिमा बाजपेयी,
अधीक्षक सर्वेक्षक,
पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

डर रहा है मर्म हृदय,
जा रहा शनैः शनैः,
रोक लूं इस वक़्त को,
और कर लूं समन्वय,

थके हुए विछिन्न से,
इस देह को आराम दूं।
जो अन्नत है, अखंड है,
उस वक़्त को विराम दूं।।

हो गया त्रुटि संग्रहण,
करूं दक्षता का स्मरण,
पृथक—पृथक हर आपदा का,
करूं कैसे अब निराकरण,

अर्थहीन अड़चनों को,
अपनी मुठ्ठी में थाम लूं।
जो अन्नत है अखंड है,
उस वक़्त को विराम दूं !

अभी बचा है दीर्घ पथ,
दृष्टि पे धूल की है परत,
तो थम गई है ज़िन्दगी
पर चल रही है अनवरत

थमी हुई इस धुंध को,
एक सुहावनी सी शाम दूं।
जे अन्नत है, अखंड है,
उस वक़्त को विराम दूं !

अलग थलग एक द्वीप सा,
तमस में है प्रदीप सा।
खत्म रास्ता न हो रहा ,
पर लग रहा समीप सा।।

उद्यमी निज—अश्व को,
गगन चुंबी लगाम दूं।
जो अन्नत है, अखंड है,
उस वक़्त को विराम दूं।।

नभ कर रहा ये कलरव,
निनाद में है अर्नव।
क्यों मौन हो, विकल हो,
उठ! गंतव्य पे विजयी भव।।

रथ सारथी के जैसे,
निज द्वंद्व में हौसले तमाम दूं।
जो अन्नत है, अखंड है,
उस वक़्त को विराम दूं।।❑

कोरोना वायरस

–देवेन्द्र कुमार
अवर श्रेणी लिपिक
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

साल 2019 के बाद कोरोना वायरस का नाम हम सब की जिंदगी के साथ जुड़ गया है। कोरोना वायरस एक ऐसा प्राणघातक संक्रमण हुआ, जो बहुत तेजी से पूरी दुनिया में फैल गया था। भारत में मार्च 2020 में कोरोना पाया गया था, जिसके चलते पूरे देश में लॉकडाउन लगाना पड़ा । यह वायरस एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के संपर्क में आने से और हवा के माध्यम से फैलना शुरू हो रहा था। सर्दी, खांसी और बुखार होना, शरीर में दर्द होना, थकान महसूस करना, सांस लेने में तकलीफ होना यह कोरोना के सामान्य लक्षण बताया गया है। कोरोना से प्रभावित व्यक्ति को करीब 14 दिन का क्वारनटाईन रहने को कहा गया। कोरोना से बचने के लिए मास्क पहनना, सैनिटाइजर से हाथ को बार–बार साफ करना और हर व्यक्ति से 3 फुट की दूरी बनाये रखना बेहद जरुरी किया गया, इस वायरस की वजह से लाखों लोगों की मौत हो चुकी है और करोड़ो लोग इसके शिकार हो गए। वैसे तो अब तक कोरोना का सटीक इलाज पूरे दुनिया भर के वैज्ञानिक नही ढूंढ पाये थे, लेकिन कोरोना वायरस से लड़ने के लिए वैक्सीन काफी हद तक सफल रही है। यह एक प्राणघातक वायरस घोषित किया गया है, जो मनुष्य जाति का नामो निशान मिटा सकता है। कोरोना वायरस प्रत्येक देश के सामने एक गंभीर चुनौती के रूप में उभर कर सामने आया है। पूरी दुनिया में कोरोना वायरस की वजह से लोग त्राहिमाम–त्राहिमाम हो गए थे। सभी देशों की सरकारों ने अपने–अपने देशों को कोरोना वायरस से बचाने के लिए लॉकडाउन लगा दिया था, जिसके चलते लगभग 6 महीनों तक सभी देशों की रेलगाडी, बस, रोड बॉर्डर और हवाई जहाजों को बंद कर दिया था। सभी स्कूल, कॉलेज, विद्यालय इत्यादि बंद कर दिये थे, और कोई भी विद्यार्थी विद्यालय नहीं जा पा रहे थे । लोग अपने–अपने घरों से बाहर निकलने से और किसी भी व्यक्ति के संपर्क में भी आने से डरते थे। इस वायरस की वजह से अब तक दुनिया में लाखों लोगों की मृत्यु हो चुकी है। कई बड़े बड़े बिजनेस भी बंद हो चुके हैं। सभी देशों में बेकारी की समस्या बढ़ गई है। सभी देशों की अर्थव्यवस्था पर इस वायरस का सीधा असर पड़ा है। हर जगह महंगाई और गरीबी बढ़ गई है। लेकिन इस वायरस की वजह से कई लोगों को वर्क फ्रॉम होम को चलाना पड़ा, ऑनलाइन शिक्षा शुरू करके बच्चों को घर से ही अपनी पढ़ाई को पूरी करनी पड़ी, जिससे ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली के कारण इसका परिणाम सीधा छात्रों पर पड़ा क्योंकि ऑनलाइन क्लास के दौरान यदि बारी बारी से प्रत्येक छात्र अपने–अपने बातों को रखने लगेंगे तो ऐसे में अध्यापक पढ़ाई नहीं करवा पायेगे। अध्यापक सभी बच्चों पर नहीं ध्यान दे पाते, इसी कारण बच्चे अपनी पढ़ाई को क्लासरूम जैसे नहीं कर पाते। ❑

चार लाइनें

–श्रीमती राजश्री भट्ट
कार्यालय अधीक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

जमीन पर रेत के घरौंदों जैसे हैं ये रिश्ते
इनको इतने एतिहात से सजाया न कीजिए ।
मुख्तसर सी बात पर कब हो जाए ये खता
इनसे कभी खुलकर प्यार जताया न कीजिए ।

घर

मन की बात इस व्यथित दशा का
मुझको दर्पण होना था ।
क्षणिक सुख दिए जो तुमने मुझको
उन क्षणों की स्मृतियों में खोकर
मेरा यह जीवन तो बस
यादों का इक घर होना था ।

जिन्दगी की धूप

उधार की खुशियों से जी बहलाना कब तक ?
एक न एक दिन तो हकीकत से सामना होना ही था ।
दरखतों की छांव से कुछ पल ठहरे मुसाफिर का
जिन्दगी की धूप से सामना होना ही था ।

अश्कों का डेरा

दिल में दर्द का बसेरा है
फिर भी जाने क्यों ये दिल अकेला है ।
आंखों में संजोए है कई ख्याब मैंने
फिर भी न जाने क्यों
समुद्र सी इन आंखो में
अश्कों का डेरा है ।❑

मानवता अभी जिंदा है

–एम.पी. मण्डल
प्रवर श्रेणी लिपिक,
उत्तरी क्षेत्र कार्यालय, चण्डीगढ़

एक दिन मैं किसी काम से नोटरी ऑफिस, सैक्टर–17 गया, तो नोटरी ऑफिसर ने रु 50/– के स्टाम्प पेपर, साथ के ही संपर्क सेंटर से लाने को कहा। जैसे ही संपर्क सेंटर में प्रवेश किया, लोगों की लंबी कतार लगी थी। समय नष्ट किये बिना, मैं भी कतार में लग गया। थोड़ी ही देर में काउन्टर पर हंगामा शुरू हो गया। आगे जाकर देखा तो एक बूढ़ी औरत चिल्ला–चिल्ला कर कह रही थी, बेटा मैंने तुम्हें रु 500/– के 10 नोट दिए हैं, मैं अपने बच्चों की कसम खा के बोलती हूँ। मगर कॉउन्टर पर बैठी मैडम बोल रही थीं, नहीं माताजी ये देखो आपके सामने मैंने दो बार गिना है केवल 09 नोट ही हैं, लेकिन बूढ़ी औरत मानने को तैयार ही नहीं थी कि उसने कम नोट दिए हों। उस औरत को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि बहुत मुश्किल से उसने 10 नोट जमा किए होंगे । उसके आभूषण भी यही कह रहे थे कि जैसे उनका जीवन–यापन बहुत कठिनाई से होता होगा, तभी केवल रु 500/– के एक नोट के लिए वह बार–बार बोल रही थी कि मेरी मेहनत की कमाई है बेटा, मैं गिन के लायी थी, जो सीधे आपको ही दियें हैं। लोगों के बार–बार समझाने के बाद भी वो मानने को तैयार नहीं थी कि उसने कम नोट दिये हों। उनके कारण संपर्क सेंटर का कार्य बाधित हो रहा था। शायद उस रु 500/– के एक नोट की कीमत सिर्फ वही समझ पा रही थीं। अन्ततः कॉउन्टर पर बैठी मैडम के लाख समझाने के बाद भी जब उसने नहीं माना तब मैडम जी उठकर बाहर गई और महिला पुलिस को बुलाकर लाई। पुलिस के समझाने के बाद भी वह मानने को तैयार नहीं हो रही थी। जब महिला पुलिस ने उन्हें जोर से डांटा तो वो बिलख–बिलख कर रोने लगी।

यह सारी घटनाएं लाइन में लगे सभी लोगों (महिला तथा पुरुष)के सामने घटित हो रही थी, कि तभी अचानक से लाइन से निकलकर एक नहीं बल्कि तीन–तीन लोगों ने अपने पैकेट से रु 500/– के नोट निकाल कर उस बूढ़ी औरत को देने लगे। लेकिन उसने हाथ जोड़कर कहा– नहीं मुझे आपके पैसे नहीं चाहिए। फिर उस तीन में से एक सज्जन व्यक्ति (सरदार जी) ने उसे समझाया कि आप अभी ये मेरे रु 500/– लेकर जिस काम के लिए 10 नोट जमा करवाने आये हो, वह पूरा कर लो। बाद में जब भी आपके पास रुपये हो जाएं और दुबारा कभी मुलाकात हो, तो मुझे वापस कर देना। फिर उस बूढ़ी औरत ने वह रुपये लेकर कॉउन्टर पर जमा करवाए और वहाँ से चली गई।

उस औरत के जाने के बाद लोग तरह–तरह की बातें करने लगे। किसी ने कहा कि इन लोगों का तो यही काम है, इसी तरह से पैसे इकट्ठा करते हैं तो किसी ने कहा कि पैसे मांगने के नए–नए तरीके हैं। मुझे तो यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि जिस सज्जन ने

उस औरत को रुपये दिए, उनको कॉउन्टर पर बैठी मैडम जी भी कह रही थीं कि आपने क्यों दिये रुपये, मैंने महिला पुलिस बुलायी थी, वो हेन्डल कर लेती। परन्तु उस सज्जन व्यक्ति ने जो मैडम को जवाब दिया वो मेरे दिल को छू गया, उन्होंने कहा– जाने दो मैडम जी मैं जो रुपये गुरुद्वारे में दान करके आता हूँ, उससे भूखे–गरीब के लिए लंगर आदि मिलता है, ये भी दान ही है।

इस घटना से यह तो तय हो गया कि इस कलयुग में भी मानवता अभी जिन्दा है, जरूरत है बस आगे आने की।

"इन्सान तब–तक इन्सान नहीं कहलाता,
जब–तक अपनी मानवता नहीं दिखलाता।" ❑

मेरे सपनों का भारत

बी. देव चंदर
कक्षा:10ई

भारत एक राष्ट्र है जो अपने मसालों, संस्कृति और परंपराओं और सबसे महत्वपूर्ण अपनी विरासत के लिए जाना जाता है। कई महान लोगों के अपने सपनों का भारत था।

डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम चाहते थे कि भारत अंतरिक्ष में पहुंचे। इसरो की स्थापना से उनका सपना साकार हुआ।

डॉ नंबी नारायण ने भारत को अपने क्रायोजेनिक लिक्विड ईंधन बूस्टर के माध्यम से मंगल ग्रह तक पहुंचने का सपना देखा था। यह मार्स ऑर्बिटर मिशन द्वारा पूरा किया गया, जिससे भारत पहले प्रयास में मंगल पर पहुंचने वाला पहला देश बन गया। टाटा समूह भारत का विकास चाहता था। उनका सपना प्रगति पर है और जल्द ही पूरा होगा। इसके और भी कई उदाहरण है।

इसी तरह मेरे पास भी मेरे सपनों का भारत है। सबसे पहले आर्थिक दृष्टि से मेरा सपना है कि भारत से बेरोजगारी समाप्त हो जाए। यह मुश्किल लग सकता है लेकिन असंभव नहीं है। बेरोजगारी मानव संसाधन को कम करती है जिसका सीधा प्रभाव देश के आर्थिक विकास पर पड़ता है। मैं वनों की कटाई और जानवरों के शिकार को रोकने का भी सपना देखता हूं। शुक्र है कि यह सपना वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1975 और संरक्षित वनों के क्रियान्वयन और रोजगार कार्यशालाओं के कारण पूरा हो रहा है। दूसरी बात, राजनीतिक दृष्टि से मेरे पास चार प्रमुख बातें हैं। पहला, मेरा सपना है कि भारत भ्रष्टाचार मुक्त हो। दूसरा, मेरा सपना है कि सभी लोग राष्ट्र में प्रत्येक को उनकी जाति, पंथ, लिंग, नस्ल के बावजूद पहचानें। तीसरा, मेरा सपना है कि भारत एक प्लास्टिक मुक्त देश हो और चौथा, मेरा सपना है कि भारत आत्मनिर्भर हो, जिसमें निर्यात आयात से अधिक हो। भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो की स्थापना, पी एम मोदी द्वारा आत्मनिर्भर भारत, स्वच्छ भारत अभियान और एक भारत, श्रेष्ठ भारत योजनाओं की शुरुआत, मेरे सपनों के भारत को पूरा करने पर काम कर रही है। शिक्षा की दृष्टि से कम से कम प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए देश के प्रत्येक भाग के प्रत्येक बच्चे, लड़के और लड़कियों दोनों की आवश्यकता है। इसे मोदी सरकार के सर्व शिक्षा अभियान और बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, योजनाओं ने 85% पूरा कर लिया है, लेकिन बाकी 15% अभी भी बाकी है। मैं इस 15% को 85% में जोड़ने का सपना देखता हूँ। तकनीकी दृष्टि से, मैंने सोचा कि वायु प्रदूषण को कम करने का एकमात्र तरीका इलेक्ट्रिक कारों को पेश करना है। दुर्भाग्य से, इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी के कारण टेस्ला को भारत में पेशन हीं किया जा सकता है। इसकी भरपाई टाटा अविन्या ने की, जो 2024 तक प्रक्रिया में होगा और मेरे सपने को पूरा करेगा। बेंगलुरू, भारत की सिलिकॉन वैली, भारत को अपने तकनीकीकरन में बढ़ावा दे रही है, इसलिए, मेरे सपनों के भारत में सफलता ला रही है।

मेरे मन में मेरे सपनों का अनंत भारत है। कागज के एक टुकड़े पर सब कुछ फिट करना मुश्किल होगा। बताए गए सपने पूरे नहीं होते बल्कि पूरे होने की राह पर होते हैं। एक बार जब यह फिनिश लाइन पर पहुंच जाएगा, तो मैं इसे अपने सपनों के भारत के रूप में पहचान लूंगा। ❑

मालिक बाबा

–शुभेश कुमार
सहायक
पश्चिम बंगाल व सिक्किम भू–स्था0 आं0 केन्द्र, कोलकाता

वर्ष 1926 में मिथिला क्षेत्र की पावन भूमि पर एक ऐसे युगपुरूष का जन्म हुआ जिसने मानवता और सेवा भावना को नई परिभाषा प्रदान की। पूरे मिथिला क्षेत्र में बौआ साहब के नाम से प्रसिद्ध परम् श्रद्धेय महान आत्मा ने संत कबीर साहेब के सदुपदेशों को सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रसारित करने और दीन–दुखियों की सेवा करने में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

सभी के लिए तो वे बौआ साहब थे परंतु हम उन्हें 'मालिक बाबा' कहकर सम्बोधित करते थे। मालिक बाबा' बचपन में यह नाम सुनते ही रोमांच भर जाता था। अभी भी इस नाम के स्मरण मात्र से एक विलक्षण उर्वरा शक्ति का विकास पूरे शरीर में हो जाता है।

मुझे आज भी बचपन की वो घटना याद है जब मैं लगभग साढे तीन वर्ष का था। इतनी छोटी उम्र में घटित घटना ने मेरे मन–मस्तिष्क पर ऐसा प्रभाव डाला कि वो हमेशा कल की बात लगती है। मेरी मां उस समय बहुत बीमार थी। वह सुध–बुध खोकर बिस्तर पर पड़ी थी। दादी, पापा सब ने बताया कि मां बीमार है, भगवान से बोलो वो तुम्हारी मां को ठीक कर देंगे। मैं उस समय भगवान शब्द से भी अनजान था। घर में मां के बिस्तर के पास ही मालिक बाबा की तस्वीर लगी थी। मैं वहां जाकर खडा हो गया और निश्चल भाव से मालिक बाबा को सम्बोधित कर कहने लगा – हे मालिक बाबा हमारी मां के सब दुख दूर करियों ओकरा ठीक क दियौ और मेरी आखों से निरंतर आंसू बह रहे थे। तभी मां ने आवाज लगायी– हां देखै ने हम ठीक छियै, बाबा तोहर बात सुनि लेलखुन– हम ठीक भ गेलियौ। उनकी आखों से भी अश्रुधारा प्रवाहित हो रही थी ।

आज भी वो निश्चल प्रेम को याद करता हूं और ज्ञानेन्द्रियों के जाल से मुक्त होकर उसी भाव में बहकर अपने आराध्य सद्गुरू की आराधना करना चाहता हूं। इनकी शक्ति और माया का कोई पार नहीं है। जब कभी परिवार में कोई परेशानी होती, हम दौड कर मालिक बाबा के पास पहुंच जाते। हमें पूर्ण विश्वास था कि वो उसका हल जरूर निकालेंगे और सदैव ऐसा ही होता था।

उनका आकर्षक व्यक्त्वि व अंतरतम को शीतल कर देने वाली तेजस्वी वाणी सभी का मन मोह लेती थी। अनायास ही सभी उनकी ओर खिंचे चले आते थे। अनुज श्री शुभेश की रचना उनके व्यक्तित्व का सजीव चित्रण आखों के सामने प्रस्तुत करती है –

अजब निराले सतगुरू मेरे, चलो दर्शन कर आते हैं ।
ज्ञान–प्रेम की अविरल धारा, चलकर खूब नहाते हैं ।।

भव्य ललाट और बाल सुनहरे, देख मुग्ध हो जाते हैं ।
सतगुरू की मूरत को लखकर, मिलकर शीश झुकाते हैं ।।
हम सब मिलकर ऐसे गुरू की ,नित दिन वन्दन करते हैं ।
वचनामृत सुनकर हम उनके, धन्य स्वयं को करते हैं ।।
अजब निराले सतगुरू .....

सचमुच हम उनके वचनामृत सुनकर स्वयं को धन्य मानते थे। आज भी उनके शब्दों की प्रतिध्वनि कानों में गूंजती रहती है। अनेक जन्मों के सुकृत्य का ही फल होगा कि इस जन्म में उनसे साक्षात्कार हुआ। परम प्रभु की कृपा का क्या बखान करूं उन्होंने न केवल उनके विशाल परिवार का अंग बनाया, साथ ही उनके शिष्य बनने का सौभाग्य भी प्रदान किया।

दादी के अनन्य प्रयास, हमारे प्रति अगाध प्रेम तथा मालिक बाबा में पूर्ण विश्वास के फलस्वरूप वो सुखद घडी भी आ गई जब अल्पायु में ही मुझे सभी बांधवों सहित अपने परम आदरणीय मालिक बाबा के और निकट होकर उनके शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अब वे हमारे मालिक बाबा के साथ–साथ परम श्रद्धेय पूज्य सद्गुरूदेव भी थे।

किसी भी आकुलता के समय उनकी कुटिया पर पहुंचकर शांति मिल जाती थी। मैं थोडा संकोची प्रवृत्ति का व्यक्ति हूं। इसलिए कई बार मैं अपनी आकुलता में उनकी कुटिया पर चला तो जाता था, परंतु वहां सभी के सामने कुछ बोल नहीं पाता था। लेकिन मालिक बाबा के दर्शन मात्र से ही आकुलता शांत हो जाती थी। उनकी शीतल वाणी तो अंतरात्मा को शीतल कर देती थी। दरभंगा में जब कभी बाबा कहीं आते थे तो हम लोग उनके दर्शन की अभिलाषा लिए दौड़कर उनके पास पहुंच जाते थे और उस दिन को धन्य मानते थे कि आज उनके दर्शन हुए।

एक और बाल सुलभ घटना स्मरण हो रही है जिसका उल्लेख किये बिना नहीं रहा जाता। बचपन में परीक्षा के समय प्रत्येक बच्चे में परिणाम को लेकर आशंका/भय व्याप्त रहता था। इसलिए कई साथी भगवान के आगे घरों में अथवा मदिंरों में परीक्षा में लिखने वाले कलम को रख देते थे और उसी कलम से परीक्षा में लिखते थे। इससे उनमें परिणाम को झेलने की शक्ति मिलती थी। (ऐसा उस समय मेरे जैसे कई छात्रों का विचार था) मेरी भी बोर्ड की परीक्षा थी। मैं भी बेहतर परिणाम की अभिलाषा में मालिक बाबा से आशीर्वाद लेने पहुंचा (हमारे लिए एकमात्र सब कुछ हमारे मालिक बाबा ही थे और अभी भी हैं)। मैं साथ में एक नहीं दो–दो नई कलम ले गया था। कुटिया पर पहुंच कर बाबा को बंदगी की। बाबा ने कुशल–क्षेम पूछा और तत्पश्चात भोजन ग्रहण करने को कहा। मैं संकोचवश कुछ बोल नहीं पा रहा था और वहां से भोजन के लिए जा भी नहीं पा रहा था। बाबा ने पूछा क्या बात है और अपनी समस्या बताने के लिए कहा। आखिरकार मैं अपने संकोच को दूर करते हुए बोला – बाबा अपने आशीर्वाद लेब आयल छी, मैट्रिक के परीक्षा छै और एक पेन निकालकर आगे कर दिया। बाबा पहले हंसे, फिर बोले देखू बौआ बिनु पढने जौं सब आशीषे सं पास भ जेतै त अपने सोचियौ कतेक अकर्मण्यता आबि जेतै। अहि लेल पढाई त बहुत जरूरी छै। मन लगा क पढू अवश्य पास होयब। मैं थोडा निराश होने लगा। फिर बाबा मुस्कुराते हुए मेरे

हाथ से कलम ले लिए और मेरे दायें हाथ पर उससे भगवत् नाम लिखने लगे। मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने झट दूसरा पेन भी आगे कर दिया और बोला –बाबा कहीं बीच में ही

पेन खत्म भ गेलै त, तैं इहो पेन पर कृपा करियौ। बाबा हंसते हुए उस पेन से भी मेरी हथेली पर लिखने लगे। फिर उन्होंने अत्यंत कृपा की जिसे याद कर आज भी शरीर रोमांचित हो उठता है। उन्होंने अपने दोनों हाथ मेरे मस्तिष्क पर रख दिया। आशीर्वाद का ऐसा अनुग्रह पहले कभी नहीं प्राप्त हुआ था, मैं अभिभूत हो उठा।

अवतार जिस गुरूदेव का युगधर्म ले होता सदा।।
उस महामानव के लिए दृढ शक्ति होवे सर्वदा।।
हे नाथ जग में प्रकट हों तव संत की शुभ आत्मा।
जो कलह–दुख–कुविचार का जग से करें नित खात्मा ।।

संत रूप भगवान,
प्रकटे जग में सर्वदा।
दे सबको शुभ ज्ञान,
करैं सुखी संसार को।।

अनेकों ऐसी छोटी–बडी घटनाएं हैं जो हमें निश्चिंत करती थी कि हमारे साथ हमारे मालिक स्वयं मालिक बाबा हैं। हमारी सभी दुखों/समस्याओं का हल निकालने वाले, हम पर कृपा करने वाले साक्षात प्रभु।

मालिक बाबा के बारे में शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि आज भरवाडा कबीर आश्रम में होने वाले इतने विशाल वार्षिक भण्डारा के शुरूआती वर्षों में बाबा उसके आयोजन के लिए पूरे वर्ष तक प्रतिदिन अपने एक समय के भोजन बचाकर रखते थे ताकि भण्डारा में कोई भी संत द्वार से भूखा न लौटे। सभी दीन–दुखियों की सेवा में उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उस समय लोगों के पास इलाज के लिए न धन होता था और न ही कोई सुविधा थी। उन्होंने अपने विलक्षण जडी–बूटी के ज्ञान का उपयोग कर लोगों को निशुल्क/निस्वार्थ सेवा देना प्रारम्भ किया और पूरे लगन से दीन–दुखियों की सेवा में सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

मैं जब अपनी नौकरी लगने की सूचना देने उनके पास गया तो वे अत्यंत हर्षित हुए। फिर जम्मू जैसे आतंकवाद से ग्रस्त क्षेत्र में अपनी पोस्टिंग की बात बतलाई तो उन्होंने भगवत सुमिरन की सलाह दी और सब कुछ भगवान पर छोडने को कहा। उस समय मुझे यह कतई भान नहीं था कि यह मेरी उनसे अंतिम भेंट होगी। मैं जब जम्मू जाने की तैयारी कर रहा था तो दिल्ली में उनके अत्यंत अस्वस्थ होने की सूचना मिली। मन व्याकुल हो गया और आकुलता में मैंने अपने मालिक बाबा के स्वास्थ्य लाभ हेतु विनती लिखी–

हे दीन दयाल दया कीजै ।
हम दीन अबोध की अरजी लीजै ।।
हे नाथ, सनाथ तुमहि से हम,
नहिं हमे अनाथ प्रभो कीजै ।।

हे जगत–पिता, हे परम–पूज्य,
विनती बस इतनी है तुमसे ।
हम सबके नाथ और पूज्य गुरू,
की स्वास्थ्य कामना है तुमसे ।।
हे नाथ कृपालु कृपा कर दो ।
हम सबकी खाली झोलियां भर दो ।।
हे दीन–दयाल, हे कृपा–कृपा–निधान
अरजी मेरी इतनी सुनिये ।
प्रभो नाथ हमारे गुरूवर को,
मचर स्वास्थ्य–लाभ को वर दीजै ।।

परंतु भगवान को कुछ और ही मंजूर था। वर्ष 2009 के आखिर में वो सबसे दुःखद दिन भी आया। उन दिनों मैं अपनी सेवा के प्रारम्भिक दौर में जम्मू में था। पापा का फोन आया, वो बोले– हम सब अनाथ भ गेलौं, मालिक बाबा नै रहलाह। शरीर सुन्न पड गया। मालिक बाबा के बिना हम लोग जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। सचमुच हम अनाथ हो गये।

मालिक बाबा के सदुपदेशों को सदैव सामने रखकर मैं आचरण करने की कोशिश करता हूं और इस भवसागर में अपनी नैया को पार लगाने का प्रयास करता हूं। कभी कभी सोचता हूं कि मालिक बाबा का अनुग्रह नहीं प्राप्त हुआ होता तो पता नहीं इस भवसागर में कितनी बार अंधकूपों में भटक गया होता। परम पूज्य परमात्मा को कोटि–कोटि धन्यवाद।
हे परम पूज्य गुरूदेव जू, हम अनाथ पर दया कीजै।
हम दीन अबोध की अरजी लीजै,
प्रभु मोहि अपने शरण लीजै ।।❑

"साहित्य के हर पथ पर हमारा कारवाँ तेजी से बढ़ता जा रहा है।"

- रामवृक्ष बेनीपुरी।

हिन्दी

–राजेश रंजन
अधीक्षक सर्वेक्षक
झारखंड भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द, रांची

जी रही हूं, मर रही हूं
थोड़ी सांसे भर रही हूं ।
जो बचा, जितना बचा
जीने की कोशिश कर रही हूं ।

जीर्ण शीर्ण हाल मेरा
बस बचा है खाल मेरा ।
अंग्रेजी की धूल में, खो गया
हिंदोस्तान का लाल मेरा ।
लाल की ललकार पर
हिंदोस्तान की पुकार पर
फिर से संवर रही हूं ।
जी रही हूं, मर रही हूं.....
जीने की कोशिश कर रही हूं ।।

पाठशाला की पुस्तकों में
पाठ बन के रह गई ।
गुम गई हूं मैं कहीं
और, संविधान की सूची
आठ बन के रह गई ।
जख्म जो लगे है मुझे
उन्हीं से अब उबर रही हूं ।
जी रही हूं, मर रही हूं.....

जीने की कोशिश कर रही हूं ।।
पड़ी हुई हूं कोने में
क्या मिलेगा रोने में
कमर मेरी अब टूट रही
हिंगलिश को ढोने में ।
मैं तो अब उतर रही हूं ।
जी रही हूं, मर रही हूं
थोड़ी सांसे भर रही हूं ।
जो बचा, जितना बचा
जीने की कोशिश कर रही हूं।।❑

पहाड़ से पलायन

–सुनील कुमार रतूड़ी
अधिकारी सर्वेक्षक
हिमाचल प्रदेश जीडीसी, चंडीगढ़

पहाड़ों से मैदानी क्षेत्रो में पलायन एक नियमित कियाकलाप बन गया है। इस पर विचार विमर्श से लेकर नीति निर्धारण कियान्वयन के बहुतेरे प्रयास किए हुए हैं। किन्तु हम सब जानते हैं कि यह पर्याप्त परिणाम नहीं दे पाया है अपितु यह अधिक गति से बढ़ ही रहा है।

यदि पलायन कर्ता से कारण जानना चाहें तो वह अपनी आगामी पीढ़ी के बेहतर भविष्य का कारण बताकर इतिश्री कर लेगा। यह जानना भी आवश्यक है कि पलायन की प्रकिया में सभी वर्ग, समुदाय और स्तर के लोग शामिल हैं। इसमें लेखक और पाठक भी कहीं न कहीं शामिल आवश्यक हैं।

यदि सीधे तौर पर समझना चाहें तो पलायन के पीछे विभिन्न स्थानों पर असमान विकास के अतिरिक्त लोगों की स्वार्थ भरी सोच भी जिम्मेदार है। इसमें संदेह नहीं है कि विविधतापूर्ण भौगोलिक परिस्थितियों और अन्य प्रशासनिक कारणों से पहाड़ों पर विकास, सुविधाओं एवं बेहतर भविष्य के प्रति आशान्वित नहीं रहा जा सकता। लेकिन ऐसे मामले भी कम नहीं हैं जिसमें उपरोक्त कारणों को आड़ बनाकर पहाड़ छोड़ने का आधार बना दिया जाता है। यदि ऐसे मामलों का समाधान किया जाए तो उद्देश्य प्राप्ति की ओर कुछ कदम आगे बढ़ा जा सकता है। जहां तक सुविधाओं के आभाव की समस्या है, इससे तभी पार पाया जा सकता है जब हर प्रकार के कारोबार, सरकारी कामकाज, उद्योग आदि पहाड़ों पर आवश्यक रूप से चलाए जाएं। इसके लिए शासक वर्ग ही समुचित उपाय कर सकता है। इस कार्य को उच्च प्राथमिकता में रखना होगा अन्यथा खानापूर्ति ही साबित होगी।

निः संदेह इसे करने में पहाड़ सरीखी मुश्किलें आएगी किन्तु इसे नजर अंदाज किया गया तो तथाकथित विकसित शहरों का दम घुटना तय है और यह स्थिति किसी को भी प्रिय नहीं होगी। आज पहाड़ों पर या पहाड़ी गावों में सिर्फ वे लोग ही रह रहे हैं जो कि अपने रोजगार हेतु वहां है या वे अपने गंतव्य जाने में असफल रहे, दोनों ही मामले अनिच्छा व मजबूरी का ही पर्याय है।

पहाड़ों के आधुनिक विकास में पर्यावरण की सुरक्षा करना भी आवश्यक है किन्तु गंभीरता से प्रयास किये जाएं तो उचित मार्ग अवश्य मिलेगा। सिर्फ पर्यटन और खेती बागवानी द्वारा पहाड़ों का विकास शायद सफल न हो, इसलिए इसी क्रम में अन्य रोजगार, कारोबार जोड़े जा सकते हैं। शिक्षा, स्वास्थ, शोध संस्थान और पर्यावरण अनुकूल उद्योगों के रूप में कुछ विकल्प मिल सकते हैं। ऐसा करके वांछित उद्देश्यों की प्राप्ति काफी हद तक हो सकती है।❑

काली स्याही

–कृष्ण कुमार खरवार 'कृष'
उप अधीक्षक सर्वेक्षक
बिहार भू–स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, पटना

जब भय को आप जीत चुके हों
मंजिल तब आपके पास दिखती है ।
बाधाएं कितनी भी हो सफर में
जीवन साकार सी लगती है ।
किसी के होने न होने से कोई फर्क नहीं ,
जब भय नहीं है कुछ खोने का ।
तो अंजाम का कोई भय नहीं ,
भय को हमने जीत लिया ।
तो काली स्याही का भय नहीं ।
मैं सवाली भी हूँ , बवाली भी हूँ .
ये निर्धारण कर लो तुम
मुझे देखना चाहते हो किस रूप में ,
मैं मिल जाऊँगा उस रूप में ,
क्योंकि मुझे काली स्याही का भय नहीं। ❑

आत्मदर्पण

जितना सुलझा हूँ उतना उलझा हूँ मैं
एक्सप्रेसवे से पगडंडियों तक सफर है मेरा
तुम मुझे यूँ मीठी गोलियां ना खिलाओ
काजल की कोठरी से श्वेत निकला हूँ मैं
लगता है तुमने मेरी शराफत देखी है ।
कभी अमावस बन कर आओ, काली स्याही में लिपटा हूँ मैं
मैं क्या हूँ मुझे ही नहीं पता
पर मैं कर सकता हूँ सब कुछ
चाहे नदियों में बहना हो या समुन्दर में डूबना
हवाओं में उड़ना हो या अंगारों पर चलना
मेरी क्षमता से कुछ भी परे नहीं
तुम बस अपनी असली औकात दिखाओ तो सही
जितना सुलझा हुआ दीखता हूँ उतना उलझा हूँ मैं
जितना सवाली हूँ उतनी ही बवाली हूँ मैं क्योंकि मुझे काली स्याही का भय नहीं ❑

अनमोल सीख

–सीमा सिंह
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर
राष्टीय भू–स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, देहरादून

धड़ाम–धड़ाम करके श्यामला के हृदय में जैसे पत्थर गिरे जा रहे थे।दिमाग संज्ञाशून्य सा था। चेतना शून्य होने का भी आभास सा हो रहा था। बहू के बोले एक–एक शब्द उसके हृदय को भेद रहे थे। श्यामला की प्यारी बहू जिसे वह सारी जिंदगी पलकों पर बिठाये रही ससुर का स्वर्गवास होते ही अभी कुछ समय न गुजरा था कि बहु का प्रचंड अवतार श्यामला के सामने था। श्यामला की गलती इतनी थी कि उसने बहु को गैर समय सोने को लेकर टोक दिया था। उसके बाद तो जैसे घर में भूकंप ही आ गया। बहू ने उसे कटु शब्द बोलने में कोई कसर न छोड़ी। उसके तीक्ष्ण प्रहार अभी भी जारी थे । मम्मी आप अपने काम से मतलब रखिए। बीस साल हो गये मुझे इस घर में आये। आपकी हिम्मत कैसे होती है मुझे इस तरह टोकने की। आईंदा गुस्ताखी की तो भूल जाऊँगी आप मेरी सास हो अपनी हद में रहना सीखिए और मेरी जिदंगी में हर समय दखल देना बंद कीजिए, कहकर अपने बैडरुम का दरवाजा उसने धड़ाम से बंद किया। श्यामला की आँखो से अपमान के आंसू बह निकले सोचा न था कि अपने पति के स्वर्गवास के बाद वह इतनी निरीह व असहाय हो जायेगी। अपनी बाकी जिंदगी जीने के लिए उसे इतनी कठिनाई होगी। आखिर श्यामला भी कभी बहू बनकर इस घर में आई थी तब उसकी सास ने भी पहले दिन ही उसे जता दिया था कि देर से उठने की आजादी सिर्फ उनके बेटे को थी श्यामला को नहीं। पर वो तो अपनी सास के आदेश के आगे चूँ भी नहीं कर पाई थी और वही अपेक्षा वह अपनी बहू से कर रही थी। पर कहां जानती थी कि जमाना अब वो नहीं रहा। झर–झर कर श्यामला की आँखों में आंसू बह निकले तथा मस्तिष्क इस प्रश्न का उत्तर ढूढ़ने लगा कि गलती किसकी है। उनकी या बहू की। जब मन ही मन तर्क वितर्क करके भी उत्तर न सूझा तो वह बुझे मन से उठ गई। सर में तीक्ष्ण दर्द था। मुँह धोया तो कुछ आराम मिला तो अपने लिए एक कप चाय बनाई। श्यामला जी का बेटा राकेश दो दिन के ऑफिस के काम से शहर से बाहर जा रखा था व पोता शुभम तो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए दिल्ली में था। घर में अभी मात्र दो ही प्राणी थे। बहू और श्यामला। घर का और रसोई का काम तो दोनों सास बहू ने मिलकर सुबह ही कर दिया था। उसके बाद ही बहू नाश्ता करके अपने कमरे में लेट गई और उसकी आँख लग गई यहीं बात ही श्यामला को खल गई की गैर टाइम कैसे बहू सो गई । हमारे जमाने में तो कभी ऐसा नहीं होता था हालांकि आज से पहले बहु ने कभी इतने तीक्ष्ण स्वर में उससे बात न की थी। अब श्यामला ने थोड़ी देर के लिए टी•वी• खोलकर भजन का चैनल लगा लिया। पर जब मन ही इतना खिन्न था तो कहां भगवान में ही रमना था। अतंतः टी•वी• का स्विच भी ऑफ कर दिया। घर का माहौल बोझिल था। सोचा चलो अब तक मेरी दोनों सहेलियाँ भी पार्क मे ं बैठने आ गई होंगी। चार बजे नित्यप्रति श्यामला व उसकी दो सहेलियाँ मालती व गरिमा पार्क में बैठकर अपने सुख दुख साँझा करती थी। हालांकि मालती

उन दोनों से उम्र में दस साल बड़ी थी अतः दोनो सहेली होते हुए भी दीदी कहकर बुलाती थी। अब श्यामला अपने दुख व अवसादों का पिटारा लेकर पंद्रह मिनट पहले ही पार्क में पहुँच गयी। श्यामला की किस्मत अच्छी थी कि आज भाग्यवश श्यामला की दोनों सहेलियाँ भी समय से पहले ही पार्क पहुँच चुकी थी। श्यामला का उतरा मुँह दोनों ने देख लिया। क्या बात है श्यामला, सुनते ही अपनापन मिलते ही श्यामला के फिर झर–झर आँसू बहने शुरु हो गये। बड़ी मुश्किल से हिम्मत जुटा कर श्यामला ने दिन का किस्सा अपनी सहेलियों को सुनाया। बताओ दीदी, वो मालती से मुखाति थी। मैं भी कभी बहू थी पर मजाल जो कभी अपनी सास को मैंने झूठ में भी किसी बात पर जवाब दिया हो। हम पर भी तो घर में कितनी तरह के प्रतिबंध थे। देर से न उठो, ऐसे कपड़े पहनो हमेशा सर पर पल्लू रखो। ठीक से चलो, कही पति के साथ भी बाहर घूमने की आजादी नहीं थी। फिर भी अक्षरशः मैंने उनकी आज्ञाओं का पालन किया पर जरा इस कल की आयी बहु को तो देखो। आने दो राकेश को उसको ही इसकी शिकायत करुँगी। बताइये क्या उसे मुझे ऐसे कठिन शब्द बोलने का अधिकार है। मालती और गरिमा ने एक दूसरे को देखा कि क्या कहें या क्या न कहे। कुछ पल रूक कर आखिर मालती ने गला खंखारा और श्यामला से मुखातिब हुई और बोली एक बात बताओ श्यामा वो कभी–कभी उसे अपनेपन से श्यामा के नाम से बुलाती थी। क्या जब तुम्हारी सास ने तुम पर अपनी आशाओं वा आदेशों के पहाड़ थोपे तो क्या तुमने उनकी बातों का सहर्ष स्वीकार किया या तुम्हें उससे कुछ असुविधा हुई और तुमने उससे मजबूरी में स्वीकारा। ऐसा सुनना था कि श्यामला के पूर्व दुखद अनुभव पुनः बाहर निकल आये कहाँ दीदी, प्रतिबंध की जिंदगी जीनी किसको अच्छी लगती है। उस समय मुझे उन सब चीजों से कितनी असुविधा हुई इसका अंदाजा सिर्फ मुझे है हर चीज में उनकी टोक पड़ जाती थी। काम अच्छा करो या बहुत अच्छा उनकी आशाओं की कसौटी पर पूरा उतर नहीं पाती थी। हमेशा घुट–घुट के ही जीवन जिया। मर्जी की स्वच्छन्द जिंदगी कौन नहीं चाहता और उस समय तो सयुंक्त परिवार हुआ करते थे कितने, सास–ससुर (चाचा, ताऊ) देवर, जेठ घर में इकट्ठे रहते थे। बड़ी मुश्किल से वो समय निकाला। सारी जवानी के दिन उसमें ही स्वाहा हो गए। अब पुनः मालती जी ने कहा सुनो श्यामा जैसे तुम्हें अपनी परतंत्र जिंदगी का मलाल है, जबकि उस समय, वक्त ही वैसा था फिर तुम आज के युग में अपनी बहु से वो ही सब उम्मीद क्यों रखती हो जो किसी समय तुम्हारी नजर में ही सही नहीं थी। श्यामला ने कुछ कहने को मुँह खोला पर मालती जी ने पुनः कहना शुरू किया, सुनों श्यामा अगर पचास साल पहले की पद्धति को तुम आज के समय में भी चलाने का प्रयास करोगी तो समझ लो तुम्हें इससे दुख के अतिरिक्त कुछ न मिलेगा। तुम तो पढ़र लिखी हो क्यों नहीं विकसित सोच के साथ आज मं जीने का प्रयास करती । मानती हूं तुम अपनी बहु को हृदय से बहुत प्यार करती हो पर तुम्हारी कुछ कमियों का दर्पण आज तुम्हे दिखाना चाहूंगी। तु अपनी बहू की तारीफ के काम जो वो करती है वे तो तु किसी से नहीं करती परन्तु उसकी कोई भी कमी है तुम जो बात उससे करती हो वो जितने घर काम करने जाती है उतने घर वे बातें बताती है। क्या वो तुम्हें और घरों के किस्से नहीं सुनाती ? पर श्यामला ने कुछ कहना चाहा पर शब्द उसकी जुबान पर न आ सके मालती ने बातों का सिरा पकड़ कर कहा बहू की जो बुराई तुम करती हो वो क्या वापस उसके कानों तक नहीं पहुंचती होंगी क्या इज्जत रह जाती

होगी उसके मन में तुम्हारी जब वो तुम्हारे द्वारा की गई बुराई दूसरों की जुबान से सुनती होगी। श्यामला की नजरें अब झुकने लगी थी।

सुना, श्यामा मालती जी ने गरम लोहे पर चोट करते हुए कहा ये कैसा व्यवहार की बुराई सबसे करो पर तारीफ किसी से नहीं जबकि जहां तक मैं जानती हूं आज से पहले कभी तुम्हारी बहु ने तुम्हें अपशब्द नहीं कहे। कहो क्या मैं गलत कह रही हूँ श्यामला जी की जुबान को तो जैसे लकवा मार गया था।

आखिर आज उन्हें ही आईना देखने को मिल रहा था। मालती जी ने कहा मेरी बात को गांठ बांध लो बहन अपनी बीते कल की जिंदगी के आधार को आज का व्यवहार न बनाओ। जो प्यार हृदय में सहेज कर अपनी बहु के लिए रखती हो उसे बाहर भी प्रदर्शित करो तो देखना उसके कितने सकारात्मक परिणाम पाओगी और हां चलो अब घर चलें काफी देर हो गयी है हम भी घर चलते हैं कहकर मालती जी ने श्यामा के सिर पर हाथ फेरा श्यामला भी मालती के गले लग गई। शाम के छः बज चुके थे जब श्यामला घर पहुँची। अंदर देखा तो बहु घबराई हुई चहल कदमी कर रही थी। सास को देखते ही चैन की सांस ली परंतु आँखों से टप–टप आँसू बह निकले। घबराहट उसके मुख पर साफ अंकित थी कहाँ चली गई थी मम्मी कह कर वह हिचकिचयाँ लेकर रोने लगी। आँसुओं का बांध बह गया था। आखिर श्यामला ने घर वापिस आने में कभी इतनी देर न लगाई थी। मैंने आपको जो अपशब्द बोले उसके लिए मुझे माफ कर दीजिए। पता नहीं इतना बड़ा अपराध मुझसे कैसे हो गया। कहकर वह फूट–फूट कर रो रही थी श्यामला ने उसे गले लगा लिया और बोली अरे पता नहीं क्या–क्या सोचती है अरे टहलने जरा दूर तक निकल गयी थी इसलिए देर हो गयी और रही बात माफ करने की तो क्या मेरी बेटी भी किसी गुस्से में मुझे इतने शब्द बोलती तो क्या उसे मैं माफ न करती। अरे उन शब्दों को तो मैं कबका भूल गई पता नहीं तू काहे को हलकान है और जा शाम का समय है रोते नहीं, जा मुंह धो मैं तेरे लिए अच्छी से चाय बनाती हूँ और हाँ बहुत दिनों से तूने मेरी पसंद की कढ़ी नहीं बनाई जो तू बहुत स्वादिष्ट बनाती है। आज मेरे लिए कढ़ी बनाना। दोनों के चेहरे पर इस समय मुस्कुराहट थी। आखिर दोनों के मन के कलुष आँख के रास्ते धुल जो चुके थे।❑

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।"

– डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद

एक भारत श्रेष्ठ भारत

–स्वीटी मंगल
एम टी एस
मध्य प्रदेश भूस्थानिक आंकड़ा केन्द्र, जबलपुर

हिन्द की अनुपम धरा पर, सज रहा है तेज भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

हिमालय से हिन्द तक और थार से बंगाल तक ।
आर्य अंग्रेजों से लेकर, आजादी के काल तक।।
रहा सदैव मोतियों में बिंधकर, माला है अटूट भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

सिंध–सतलज से बना है गंगा जमुना तक भारत ।
कावेरी नर्मदा गोदावरी सब आज लिख रहीं हैं इबारत।।
धर्म पूजा ज्ञान आस्था, सभ्यता का केन्द्र भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

खान–पान, आहार विविधता, वेशभूषा का अद्भुत संगम है।
धर्म कला व्यवहार का यह, मिश्रण कितना अनुपम है ।।
नारी की दैवीय महिमा का, करता है बखान भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

आर्य ईरानी मुगल सब, अंग्रेज तक बह गए ।
धारा ऐसी है विरल यह, ज्ञान से सब तर गए।।
आज के युग में लगता, फिर बनता विश्वगुरू है भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

प्रेम सद्भाव और न्याय का, संदेश देता है रहा जो।
फिर आज क्यों धर्म जाति पर लड़ रहा है वो।।
विवेकानंद की कर्म भूमि पर फिर आज युवा क्यों कर्मठ न रहा।
आज पुनः यह सोचने का, आया है सही दिवस भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

फिर जगा अलख कुछ ऐसी विश्व करें गुणगान भारत।
यूरोप जापान अमेरिका सब दे हमें सम्मान हे भारत।।
योग गुरू आयुर्वेद के ज्ञाता है मेरा तुझे प्रणाम हे भारत।
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।।

है जगाना तुझे अब भारतवासी, बनाना अद्भुत स्वर्णिम भारत
राहें ऐसी चलनी होगी, बन जाए सर्वश्रेष्ठ भारत।।
तभी सजेगा विश्व धरा पर, विश्वगुरू सम तेज भारत
आओ मिलकर आज देखें, एक भारत श्रेष्ठ भारत।। ❑

मेरी प्यारी ब्रोकली

—नरेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

एक बार मेरे मन में ख्याल आया कि बाजार में ब्रोकली तो हम कई बार देखते है लेकिन उसको अपने घर के किचन गार्डन में कैसे उगाएं इसके लिए मुझे क्या करना होगा ? यह सवाल मेरा मन मुझसे करने लगा। इस सवाल का जवाब ढूढ़ने के लिए कई रात मुझे पूरी नींद नहीं आयी। इसके लिए मैं कई बार आधी रात को भी जाग जाता था कभी भोर के समय उठकर इस सवाल का जवाब ढूढ़ने का प्रयत्न करता। काफी प्रयास के पश्चात् भी मुझे मेरे सवाल का जवाब नहीं मिल रहा था। एक दिन हिम्मत करके मैं एक बीज विक्रेता की दुकान पर पहुंचा। वहां जाकर मैंने उस बीज विक्रेता से ब्रोकली का अपने घर के किचन गार्डन में उगाने के बारे में सम्पूर्ण जानकारी हासिल की। जिसके पश्चात् मेरे मन में ब्रोकली को उगाने की नई स्फूर्ति जागृत हुई। वहां से ब्रोकली के बीज क्रय कर मैंने अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

घर पहुंचकर मैंने ब्रोकली के बीज के पैकेट पर दिये गये दिशा निर्देशों का ध्यानपूर्वक गहन अध्ययन किया तदनुसार मैंने अपनी क्यारी की मिट्टी को खोदकर कई बार पलट दिया तथा उसमें गोबर की सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद तथा कीटनाशक दवायें मिलाकर उसको ब्रोकली उगाने हेतु तैयार कर दिया। ब्रोकली की पौध तैयार करने के लिए बाजार से कागज के डिस्पोशल ग्लास लेकर आया। डिस्पोजल ग्लासो में गोबर की सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद तथा नदी की रेत भरकर उसे क्यारी के एक कोने में पंक्तिबद्ध तरीके से रखकर प्रत्येक डिस्पोजल ग्लास में एक ब्रोकली का बीज डालकर आवश्यकतानुसार पानी डालकर उसे पुराल की सहायता से ढक दिया। भोर के समय अगले दिन फव्वारे की सहायता से उन पर पानी दिया। इसी प्रकार सांय के समय भी पानी दिया गया।कुछ दिनों की अथक सेवा के पश्चात् मन में एक उत्सुकता बनी रहती थी कि इन गिलासों में ब्रोकली के नये पौधें कब अंकुरित होंगे। उनकी एक झलक देखने के लिए मन बड़ा हिंडोले ले रहा था। मन को शान्त करने के लिए मैंने मन को बहुत समझाया परन्तु जितना मन को समझाता उतना ही मन में ब्रोकली के नये पौधें को देखने की इच्छाशक्ति और तीव्र हो जाती।

दो सप्ताह के लम्बे अंतराल के पश्चात् आखिर वो खुशी का दिन आ ही गया जिसका मुझे बेसब्री से इन्तजार था। ब्रोकली के नये पौधे की पहली झलक देखकर मुझे ऐसी खुशी महसूस हुई जैसे मेरे किचन गार्डन परिवार में किसी नये सदस्य का जन्म हुआ हो। ब्रोकली के सम्बन्ध में व्यवहारिक रूप से प्राप्त जानकारी को आपके सम्मुख रखने का यह मेरा छोटा सा प्रयास है:—

ब्रोकली उगाने का उपयुक्त समय सर्दी का मौसम होता है। इसके बीज के अंकुरण तथा पौधों को अच्छी वृद्धि के लिए तापमान 20—25 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए। इसकी नर्सरी तैयार

करने का समय अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा होता है। पर्वतीय क्षेत्रों में कम उंचाई वाले क्षेत्रों में सिंतबर–अक्टूबर, मध्यम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में अगस्त सितंबर और अधिक ऊंचाई वाले क्षेत्रों में मार्च–अप्रैल में तैयार की जाती है।

1 –क्यारी की तैयारी

ब्रोकली उगाने के लिए मिट्टी की दो तीन बार अच्छी तरह फावड़े की सहायता से जुताई करनी चाहिए। इसके पश्चात मिट्टी से कंकड़ पत्थर निकालने के बाद मिटटी में गोबर की सड़ी हुई कम्पोस्ट खाद डालकर मिट्टी को फिर अच्छी प्रकार से मिला लेना चाहिए। इसके बाद लकड़ी की पट्टी की सहायता से समतल बना लेना चाहिए। आपकी क्यारी जमीन से एक उगंल ऊंची उठी हुई होनी चाहिए ताकि क्यारी में आवश्यकता से अधिक पानी ठहरा होने न पाये। क्यारी में कीटों एवं व्याधियों से बचाव के लिए नीम के पत्तों को पानी में उबालकर उसे ठण्डा करके लगभग पन्द्रह दिनों के अन्तराल में ब्रोकली के पौधों पर छिड़काव अवश्य करना चाहिए।

2 –ब्रोकली की रोपाई

क्यारी में जब पौधे 10 से 12 सेंटीमीटर या 4 से 5 सप्ताह के हो जाएं तो उनकी खेत में रोपाई कर देनी चाहिए। ब्रोकली की रोपाई पंक्तियों में की जानी चाहिए। किस्मों के अनुसार पंक्ति से पंक्ति की दूरी 24 से 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 40 सेंटीमीटर होनी चाहिए। खेत में नमी जरूरी होनी चाहिए। इसके लिए रोपाई के बाद हल्की सिंचाई कर देनी चाहिए। पौध की रोपाई दोपहर बाद या शाम के समय ही करनी चाहिए।

3 –खरपतवार नियंत्रण एवं सिंचाई

ब्रोकली की रोपाई के डेढ़ से दो माह तक खेत से खरपतवार निकलते रहना चाहिए जिससे पौधों की बढ़वार अच्छी होती है। बात करें सिंचाई की तो इसकी पहली हल्की सिंचाई रोपाई के तुरंत बाद करनी चाहिए। इसके बाद में आवश्यकतानुसार 10 से 15 दिन के अंतराल पर हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। इसकी अच्छी पैदावार के लिए 5 से 6 सिंचाईयां की जानी चाहिए। बर्षा से बचाव हेतु क्यारी को घासफूस की छप्पर अथवा पालीथीन शीट से ढकने का प्रबंध रखना चाहिए।

ब्रोकली की कटाई फसल में जब रंग की कलियों का मुख्य सिरा (मैन हैड) बनकर तैयार हो जाए तो इसे लगभग 12 से 15 सेंटीमीटर लंबे डंठल के साथ तेज चाकू या दारांती से कटाई करनी चाहिए। मुख्य सिरा काटने के बाद पौधों के तनों से दूसरी छोटी छोटी कलियां निकलती हैं तथा ये कलियां उप सिरा (सब हैड) के रूप में तैयार हो जाती है। इन उप सिरों को भी 8 से 10 सेंटीमीटर लंबे डंठल सहित उचित समय पर कलियां खिलने से पहले कटाई कर लेनी चाहिए।

हार्ट के लिए फायदेमंद ब्रोकली में मौजूद सेलेनियम और ग्लूकोसिनोलेटस जैसे तत्व दिल को स्वस्थ रखने वाले प्रोटीन को बढ़ाने का काम करते है। कैंसर के इलाज में असरदार है। लिवर की समस्याओं में राहत देता है, हडिडयों, दांतों के लिए फायदेमंद, वजन कम करने में

मददगार, गर्भावस्था में फायदेमंद। ब्रोकली में विटामिन सी की पर्याप्त मात्रा पायी जाती है। विटामिन सी शरीर में इम्यून सिस्टम को बूस्ट करने और संक्रमण से बचाव में मदद करती है।

ब्रोकली के अन्दर फाइबर मौजूद होता है जो पेट के लिए बेहद फायदेमंद साबित होता है। लेकिन यदि अधिक मात्रा में ब्रोकली का सेवन किया जाए तो इससे शरीर में फाइबर की मात्रा बढ़ सकती है। वहीं यदि शरीर में फाइबर की मात्रा अधिक हो जाए तो व्यक्ति को पेट की समस्याओं जैसे दस्त, कब्ज, एलर्जी त्वचा पर दाने आदि का सामना करना पड़ सकता है। अधिक मात्रा में यदि ब्रोकली का सेवन किया जाए तो इससे व्यक्ति को एलर्जी की समस्या भी हो सकती है, जिसमें खुजली, त्वचा का लाल होना, त्वचा पर दाने आदि शामिल हो सकते हैं। ऐसे में व्यक्ति को एलर्जी से बचने के लिए ब्रोकली का अधिक मात्रा में सेवन नहीं करना चाहिए। ❑

है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का

–सुल्तान शाह
सर्वेक्षण सहायक
मध्य प्रदेश भूस्थानिक आंकड़ा केन्द्र, जबलपुर

सो रहा था विश्व जब, अंधेरा जग में व्याप्त था ।
धर्म कला विज्ञान में भारत, प्रौढ़ता को प्राप्त था ।।
यूरोप रहता मिट्टी के घरोंदों में तब, हड़प्पा नगर नियोजित था ।
ऐसा लगता जग में मानों, अलख सितारा शोभित था ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

शैशव था जब जग सारा, आदिम जीवन जीता था ।
भारत भूमि की पुण्य धरा पर, वैदिक मानव रहता था ।।
वेद रचयिता शास्त्रों का ज्ञाता, प्रकृति संग उसका नाता था ।
नर–नारी का भेद गायब, संग सभी के जीता था ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

शून्य की हुई थी खोज यहां, ग्रह–नक्षत्रों से नाता पुराना था ।
खगोल, ज्योतिष, रोग निदान में, आगे वो जमाना था ।।
आर्यभट्ट कणाद चरक का, भारत में बड़ा मान था ।
ख्याति न थी जग में किन्तु, कोई न उनका उपमान था ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

योग आयुर्वेद प्राणायाम यहां, जीवन जीने के गजब तरीके थे ।
चरक पतंजलि धन्तवरि ने , बताए नए सलीखे थे ।।
सम्यक् जीवन फलाहार ध्यान, जीवन में उनके व्याप्त थे ।
ऐसे लगता है मानो अब, अमर जीवन के उन्हें बलिदान प्राप्त थे ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

पौधों में हमने जीवन खोजा, जीवन गुत्थी सुलझायी थी ।
कैसे बनेगा जीन कृत्रिम, दुनिया को बात बतायी थी ।।
रमन प्रभाव खोजा था हमने, चन्द्रशेखर सीमा समझायी थी ।
गॉड पार्टिकल के शोध की बात, जहां को सिखायी थी ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

एकल प्रयास पहुंच मंगल पर, जग में ख्याति पायी थी ।
चन्द्रमा पर पहुंच कर हमने, पानी है बात बतायी थी ।।
अब बारी है मानव को, अम्बर की सैर कराने की ।
गगनयान की है तैयारी, नभ में धाक जमाने की ।।

क्यूं न करूं मान फिर, भारत के अनुपम ज्ञान का ,
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।

अब बारी आयी है मशीन को मानव बनाने की ।
बुद्वि और भावना डालकर उससे काम कराने की ।।
आशा सहित डर है मुझको, भारत मेरा सफल तो होगा ।
मानव जाति रहें सुरक्षित, ध्यान उसे बस रखना होगा ।।

हैं भरोसा पूरा मेरा, भारत के अनुपम ज्ञान में ।
धर्म–ज्ञान से जुड़ा रहेगा, फैलेगी आभा आसमान में ।।

कोई कारण नहीं है जग में, भारत मां के अपमान का
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।
है मुझे अभिमान बहुत, हिन्द के विज्ञान का ।।❑

**"हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है
जिनके बल पर वह
विश्व की साहित्यिक भाषाओं की
अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।"**

- मैथिलीशरण गुप्त

सच्ची प्रीत

–राकेश कुमार
सुरुक्षा पर्यवेक्षक पश्चिमी मुद्रण वर्ग
पालम, दिल्ली कैंट

तू फूल है चमन का
मैं भंवरा बन खिंचा चला आऊं तेरी ओर
तुम तोड़ मत देना ये प्रेम की डोर
नहीं है, मेरा तेरे बिन कोई ठौर
खिले फूल के लिए ही तो , भंवरा मचाये शोर
तुम बिन नहीं रह पाउँगा, आ मेरे चित चोर
काली घटा बिन बादल के, बादल बरसे हर ओर
मोर पपीहा और तीतर भी प्रेम से घूम रहे चहुं ओर
तू फूल है चमन का
मैं भंवरा बन खिंचा चला आऊं तेरी ओर ।

छल कपट भरा जगत में
नहीं प्रेम का मोल कोई
तुम क्या जानो प्रेम वफा को
क्योंकि नहीं तुम्हारा उस भंवरे से मेल कोई
वादे तोड़कर मुकर जाने की नहीं जगत में जेल कोई
सच्चा प्रेम निभाना नहीं बच्चों का खेल कोई
मन लगा तू भी सच्चा, न डर करदे फेल कोई
सच्चे प्रेम खरीदी की, बाजार में नहीं लगती सेल कोई
तू फूल है चमन का
मैं भंवरा बन खिंचा चला आंऊ तेरी ओर ।

पराग रस जीवन में अहम
नहीं है भँवरे को अपने जीवन पे रहम
प्रेम ध्यान में खोकर, सच्ची प्रीत संजोकर
क्या आज क्या कल क्या घर, क्या बाहर
रात गुजारे फूल पत्तियों पे सोकर
करो प्रेम उस भंवरे की तरह
जिसकी महिमा आज कवि (मैं) तमुको सुनाऊं खुश होकर
मैं खिंचा चला आऊं तेरी ओर ।❑

ऐतिहासिक झण्डा साहिब मेला

–एच एस बिष्ट
सहायक
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

पौराणिक मान्यता के अनुसार श्री गुरू रामराय जी का पदार्पण देहरादून में 16वीं सदी में हुआ था उस समय गुरू महाराज ने श्री दरबार साहिब में लोक कल्याण के लिए विशाल झण्डा का प्रारम्भ कर लोगों को इस ध्वज से आर्शीवाद प्राप्त करने का संदेश दिया था। इसी के साथ झण्डा साहिब के दर्शन की परंपरा की शुरूआत हुई। इस संदेश का इतिहास देहरादून के अस्तित्व से जुड़ा हुआ है। श्री गुरू रामराय जी का प्रतिवर्ष लगने वाले मेले में देश–विदेश से लाखों श्रद्धालु मत्था टेकने पहुचंते है।

झण्डे जी का मेला प्रतिवर्ष होली के पांचवे दिन से प्रारंभ होता है। ऐतिहासिक झण्डे जी का मेला एक महीने तक चलता है जो उत्तरी भारत का सबसे बड़ा मेला है जो बहुत से श्रद्धालुओं और दर्शकों को आकर्षित करता है । झण्डे जी का मेला प्रेम, सदभावना और आस्था का प्रतीक है। मेला दरबार साहिब में झण्डे जी के आरोहण के साथ शुरू होता है। गुरू रामराय महाराज सिखों के सातवें गुरू हरराय के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका जन्म होली के पांचवे दिन वर्ष 1646 में पंजाब के होशियारपुर (अब रोपड़) के कीरतपुर में हुआ था। पंजाब में जन्मे गुरू रामराय महाराज में बचपन से आलौकिक शक्तियां थी उन्होंने छोटी उम्र में ही असीम ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसके साथ उन्होंने सामाजिक कार्य भी किये। इनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों से समाज के हर वर्ग को नई दिशा मिली।

मुगल बादशाह ने गुरू रामराय को हिन्दू पीर (महाराज) की उपाधि दी थी। महाराज ने छोटी उम्र में वैराग्य धारण कर लिया था और संगतों के साथ भ्रमण पर निकल पड़े थे। अपने भ्रमण के दौरान वह देहरादून आए। यहां पहुंचकर खुड़बुड़ा के पास उनके घोड़े का पैर जमीन पर धंस गया और उन्होंने संगत को यहीं पर रूकने का आदेश दिया। खुड़बुडा के पास रूकने पर औरंगजेब ने टिहरी गढ़वाल के राजा फतेह शाह को उनका पूरा ख्याल रखने का आदेश दिया। उस समय महाराज ने चारों दिशाओं में तीर चलाए, जहां तक तीर गये, उतनी जमीन पर अपनी संगत को ठहरने का हुक्म दिया। महाराज यहां डेरा डालने के कारण इसे डेरा कहा गया जो बाद में डेरादून से देहरादून हो गया। गुरू रामराय महाराज 1675 में कृष्ण पक्ष की पंचमी के दिन देहरादून पहुंचे थे । गुरू रामराय महाराज ने दरबार में सांझा चूल्हे की स्थापना की ताकि दरबार की चौखट में कदम रखने वाला कोई भी व्यक्ति भूखा न रहे।

शुरूआत में मेले में केवल पंजाब, हरियाणा से ही संगतें परिवार सहित दरबार साहिब पहुचंती थी । धीरे–धीरे झण्डे जी के दर्शन के लिए हिमाचल, राजस्थान एवं उ0प्र0 से श्रद्धालु पहुचंने लगे। जिनके लिए सांझा चूल्हे का विस्तार किया गया। लाखों की संख्या में भक्तों के पहुचंने के कारण अलग–अलग स्थानों पर लंगर चलाये जाते हैं। लंगर एवं ठहरने की व्यवस्था दरबार की ओर से होती है। दरबार साहिब के 343 साल पुराने इतिहास को संजोय श्री दरबार साहिब के औणदास पहले महंत थे ।

हर साल चढ़ते झण्डे के ध्वज दंड की लकड़ी साल की होती है जिसकी लम्बाई 95 फीट तक होती है जिसे 3–5 वर्ष के बाद बदलने की परंपरा है, जिस वर्ष इसको बदला जाता है तो झण्डे को चढ़ते समय लाखों की भीड़ के बीच मंत्रो एवं जयकारों की धुन के साथ इसको खड़ा किया जाता है। इसकी लकड़ी दुधली के जंगल से प्राप्त करने के लिए गाजे बाजे के साथ धूमधाम से मंहतजी की अगुवाई में सैकड़ों लोगों के झुलूस के साथ इसे प्राप्त किया जाता है। मेले में झण्डे जी पर गिलाफ चढ़ाने की परम्परा है। पुराने झण्डे जी को पूजा अर्चना के बाद उतारा जाता है और ध्वजदंड में बंधे पुराने गिलाफ हटाये जाते है जिसके बाद दरबार साहिब के सेवक दही, घी व गंगाजी से ध्वजदंड को स्नान कराते हैं। इसके बाद झण्डे जी पर पहले सादे मारकीन, इसके बाद शनील के गिलाफ चढ़ाये जाते हैं

सबसे ऊपरी हिस्से में दर्शनी गिलाफ चढ़ाया जाता है। यह बताया जाता है कि झण्डा जितना लंबा जमीन से ऊपर होता है उतना ही वह जमीन के नीचे गढ़ा हुआ है। दिलचस्प बात यह है कि जो कपड़ा हर साल चढ़ाया जाता है उसकी लम्बाई काफी होती है उसे महिलाएं सिलती हैं। यह भी मान्यता है कि जिन महिलाओं को कपड़ा सिलने का मौका मिलता है उनके जीवन भर के संपूर्ण पाप धुल जाते हैं। हर साल महिलाओं को इसका इंतजार होता है कि उन्हें कब दरबार से बुलावा आये और वह सेवा में जुट जाये।

दरबार साहिब के 300 वर्ष से अधिक इतिहास को संजोय पहले मंहत औणदास थे जिसके बाद महंत हरप्रसाद (1741–1766) श्री दरबार साहिब की गद्दी पर विराजमान हुए। इसके पश्चात् (1766–1818) तक हरसेवक महंत बने। महंत स्वरूप दास वर्ष (1818–1842) महंत नारायण दास (1854–1885), महंत लक्ष्मणदास (1885–1945), महंत इंदिरेश चरण दास (1945–2000), वर्तमान में महंत देवेंद्रदास महाराज 25 जून, 2000 से गद्दी पर विराजमान है।

शिक्षा के क्षेत्र में गरीब बच्चों को अच्छी शिक्षा देने के उद्देश्य से पंजाब, दिल्ली, उ0प्र0 एवं उत्तराखंड में 100 से अधिक श्री गुरू रामराय पब्लिक स्कूल कार्यरत हैं। जिस कारण यहां के क्षेत्रीय लोग लाभान्वित हो रहे है। दरबार साहिब में संस्कृत विद्यालय होने के साथ ही इन्टर कालेज एवं पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज की भी स्थापना की गयी। पूर्व महंत श्री इंद्रेश चरण दास ने शिक्षा के क्षेत्र को अधिक बढ़ावा देकर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

महंत देवेंद्रदास महाराज द्वारा जनमानस की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में अपने गुरू की याद में महंत इंदिरेश अस्पताल की स्थापना अप्रैल, 2002 में की गयी। इससे क्षेत्रीय लोगों के अलावा उत्तराखण्ड ही नहीं बल्कि उ0प्र0 के सीमान्त क्षेत्रों के गरीब लोगों को भी लाभ मिल रहा है।

दरबार साहिब के पुराने महल में कारीगरों द्वारा दीवारों पर सुन्दर आकृतियां बनायी गयी हैं जो दरबार साहिब की सुन्दरता को चार चांद लगा देता है। दरबार साहिब की दीवारों एवं महल के सामने तालाब का पुनः जीर्णोधार किया गया। रात के समय चांद की रोशनी इस तालाब में पड़ने से इसकी सुन्दरता मन को मोह लेती है। पुराने समय में श्रद्धालुओं द्वारा अपने पुत्रों का मुंड़न इस तालाब के पास किया जाता तथा इसे बहुत शुभ माना जाता था। प्रत्येक वर्ष बच्चों एवं जनमानस को झण्डे जी मेला की प्रतीक्षा रहती है। महल के पीछे वाले हिस्से में बाजार लगता है जिसमें बच्चे, महिलाएं एवं जनमानस अपनी पंसद के खान–पान का आनन्द लेते हैं। इसके अतिरिक्त महिलाएं घरेलू वस्तुएं व सौंदर्य प्रसाधन की खरीददारी करती हैं, मेले में बच्चे झूलों का अत्यधिक आनन्द लेते हैं ।

बीते दो वर्ष कोराना संकट के कारण केवल प्रतीकात्मक ढंग से मेले का आयोजन हुआ था और यह मेला मात्र 2 दिन चला था, लेकिन इस वर्ष यह मेला अत्यधिक भव्य ढ़ग से मनाया गया। झण्डे जी का मेला प्रेम, भाईचारे और मानवता के रूप में हर साल आयोजित होता है।❑

फूल की गाथा

—महेश कुमार नेगी (साभार)
सीनियर रिप्रोग्राफर
मानचित्र प्रकाशन निदेशालय, देहरादून

फूल ने कहा
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे,
मुझे अपना जीवन जीने दो ।
मेरी उम्र अभी है खिलने की,
मुझे पूरी तरह से खिलने दो ।
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे,

मत छीनों खुशियां मुझसे मेरी
मुझे अपनी तरह ही पनपने दो
मत मसलों यौवन मत रौंदो
मुझे अपनी मौत ही मरने दो
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे।

कुदरत की एक संतान है हम
रिश्तों में पवित्र तो रहने दो
हमसफर बनो हमदर्द बनो
मुझे मां की गोद में पलने दो
मत तोड़ो मुझे मत तोड़ो मुझे।

मेरी सुन्दरता है तुम्हारे लिए
खुशबू को तुम पर लुटने दो
पीते हैं मधुरस भ्रमर मेरा
इनको मस्ती से पीने दो
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे।

हूं तुम्हारे चमन की सजावट मैं
हर रंग में मुझको सजने दो
मुस्कान है मेरा जीवन गीत
गाने दो मुझे मुस्काने दो
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे।

हवा, धूप और पानी ने
मेरा हर रूप सजाया है
मां धरती ने अपने हाथों से
मेहनत से खूब रचाया है
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे।

मत जुल्म करो मुझ पर ऐसा
अपना स्वार्थ सजाने को
क्यों तोड़ रहे हो निर्दयी बन
मेरी लाश को मां ईश्वर पे चढ़ाने को
मत तोड़ो मुझे, मत तोड़ो मुझे,
मुझे अपना जीवन जीने दो । ❑

विकास का आम आदमी पर प्रभाव

–नरेश कुमार
कार्यालय अधीक्षक
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

आवश्यकता आविष्कार की जननी है । पुराने समय में आदमी साधारण जीवन यापन करता था। सीमित आय होने के कारण उसकी सोच भी सीमित होती थी। इसीलिए वो सदा स्वस्थ व खुश रहा करता था। समय का पहिया अपनी गति से चलता रहा, समय बदला तो आदमी की सोच में भी परिवर्तन आया। समय के साथ आदमी की जरूरत भी बदलती रही। पहले आदमी एक स्थान से दूसरे स्थान पैदल ही जाता था क्योंकि उसके पास साधन नहीं थे। उसके पश्चात् 1965 के आसपास बाजार में साइकिल उपलब्ध होने लगी । आदमी को भी दो पहिये की आवश्यकता महसूस हुई, परन्तु आर्थिक स्थिति मजबूत न होने के कारण उसे साइकिल खरीदने के लिए भी कर्ज लेना पड़ता था। साइकिल खरीदने के पश्चात् ही उसको समय की महत्ता का ज्ञान हुआ। अब वह कम समय में अधिक दूरी तय करने में सक्षम हुआ । इसके अतिरिक्त वह समय के साथ–साथ अपनी शारीरिक ऊर्जा बचाने में भी कामयाब हो सका। इस प्रकार आम आदमी ने साधारण से सामान्य स्तर की ओर विकास की पहली सीढ़ी पर अपना कदम बढ़ाया।

समय के पहिये ने गति पकड़ी और 1980 से आम आदमी के आर्थिक विकास ने भी गति पकड़ी और उसको मोटरयुक्त दो पहिया वाहन की आवश्यकता महसूस हुई। उस समय दो पहिया वाहन की खरीद/बुकिंग किये बिना सम्भव नहीं थी। इसलिए आम आदमी को दो पहिया वाहन खरीदने के लिए एक वर्ष से भी अधिक का समय लग जाता था तथा उस समय कुछ टोकन राशि के साथ बुकिंग करवाना अनिवार्य था। 1980 से पहले सड़कों पर यातायात का भार कम होने के कारण प्रदूषण का स्तर भी बहुत कम था तथा सडक दुर्घटना के मामले न के बराबर होते थे। समय बीतता गया आदमी की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ परन्तु रूपये की खरीद क्षमता कम होती गयी । व्यक्ति को दो पहिया वाहन खरीदने के लिए कर्ज की आवश्यकता होती थी। आदमी बहुत ही सीधा सादा तथा छल कपट इत्यादि से कोसों दूर हुआ करता था। व्यक्ति जब कर्ज लेकर दो पहिया वाहन (स्कूटर/मोटरसाईकिल) खरीद कर लाता था तो दुर्घटना से बचने व भगवान में सच्ची आस्था के कारण सबसे पहले वाहन को देवी पूजा के लिए मन्दिर ले जाकर, प्रसाद चढ़ाकर अपने घर आता था तथा अपने पड़ोसियों, मित्रों व रिश्तेदारों को प्रसाद के साथ अपनी क्षमता के अनुसार मिष्ठान का वितरण करता था। लोग उनके घर आकर नये दो पहिया वाहन को देखकर उनकी खुशी में शामिल होने स्वरूप मिष्ठान हेतु आभार तथा नये वाहन की बधाई देते थे। इस प्रकार लोग, एक दूसरे की खुशी में खुश होने का इजहार करते थे। दो पहिया वाहनों के सामान्य आदमी की पहुंच में आने के कारण सडकों पर यातायात का भार तेजी से बढ़ गया जिसके कारण सडक दुर्घटना के मामलों में तेजी से इजाफा हुआ । जिसके

परिणामस्वरूप प्रदूषण का स्तर भी तेजी से बढ़ने लगा। समाज में श्वास, त्वचा, हृदय व मस्तिष्क संबंधी विभिन्न प्रकार की बीमारियॉ फैलने लगी। दो पहिया वाहनों के आने से औद्योगिक विकास की गति ने रफतार पकड़ी परन्तु ऐसे विकास को पाने के लिए समाज को अपनी जान और माल देकर कीमत चुकानी पड़ी।

समय के पहिये ने गति पकड़ी और वर्ष 2000 तक आते–आते आम आदमी की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ और बैंकों द्वारा आसानी से ऋण मिलने लगा। अब तक उसने रेडियो, टेलीविजन, फ्रिज, वाशिंग मशीन इत्यादि का सुख भोग लिया था इसीलिए उसने अपने परिवार के लिए बहुत ही उपयोगी सड़क यातायात का साधन कार के बारे में जानकारी हासिल की। अपनी आर्थिक स्थिति तथा परिवार की अन्य जिम्मेदारियों को ध्यान में रखकर वह कार को विलासिता की वस्तु समझता था। घर में कार होने के कारण परिवार के सभी सदस्य एक साथ अलग–अलग जगहों, में कम समय में, सुरक्षित रूप से जा सकते हैं। कार का सफर आरामदायक होता है। इसके उपयोग से कारण गर्मी, सर्दी या वर्षा का यात्रा पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता। आज के समय में कार आवश्यकता के अतिरिक्त समाज में प्रतिष्ठा को आंकने का पैमाना बन चुकी है। पहले के समय में आम आदमी सबसे पहले खाने को रोटी, रहने को ठिकाना तथा उसके उपरांत ही अन्य दूसरी जरूरतों की ओर अपना ध्यान आकर्षित करता था परन्तु आज उसकी सोच में बहुत परिवर्तन आया है अब उसने अपने भविष्य के स्थान पर वर्तमान में जीने के बारे में सोचना शुरू कर दिया है । इसीलिए उसने अपनी आवश्यकताओं को पीछे छोड़कर कार की आवश्यकता को प्राथमिकता दी है। बैंक द्वारा आसान ऋण के कारण आज कार अधिकतर घरों में उपलब्ध हो चुकी है। कार के जितने फायदे हैं, उसके उतने ही नुकसान भी समाज के सामने आने शुरू हो गये है। कार के कारण सड़कों पर यातायात का भार तेजी से बढ़ गया, जिसके कारण आये दिन यातायात जाम जैसी समस्या उत्पन्न होने लगी है। आदमी में आलस्य की भावना बढ़ गई है तथा आदमी की जीवनशैली में भारी परिवर्तन आ गया है। प्रदूषण का स्तर कई गुना तेजी से बढ़ चुका है। जिसके फलस्वरूप श्वास, त्व्चा, हाइपरटेंशन, ब्लडप्रेशर, हृदय मस्तिष्क संबंधी विभिन्न प्रकार की बीमारियां समाज में फैल चुकी हैं।❑

हिंदी का सम्मान

राजेश कुमार वर्मा ,
वरिष्ठ रिप्रोग्राफर
मानचित्र प्रकाशन निदेशालय, देहरादून

आओ, कुछ आज सुनाते हैं, घटना विचित्र बताते हैं।
दिल्ली के कुछ हिस्से हैं, बडे अजीब ही किस्से हैं ।
कनाट प्लेस है एक यहाँ, चलते हैं दिल फेंक यहाँ ।
सबसे सुंदर हिस्सा है, उसी जगह का किस्सा है ।

जवां दिलों की धडकों पर, कनाट प्लेस की सडकों पर।
सड़क किनारे तरुवर पर, बैठे थे पंछी सुंदर ।
एक डाल पर मैना थी, बिल्कुल सूरज उदयना थी।
सुवरण नीड़ में लेटी थी, ऊँचे कुल की बेटी थी ।
इंग्लिश में बतियाती थी, हिंदी में शर्माती थी ।
इंग्लिश इतनी अच्छी थी मानो मेम की बच्ची थी।
पास में बैठा तोता था, बेमतलब रोता रहता था ।
वो हिंदी में अच्छा था, किसी निर्धन का बच्चा था ।
मैना मन से चाहती थी, पर हिंदी रास न आती थी।

मौसम में ठंडक छाई, हमदर्दी दिल में आई ।
मैना बोली हाउ आर यू, तोता बोला व्याकुल हूँ ।
ऊपर नीचे उड़ता हूँ, मन ही मन में कुढता हूँ ।
सपनो की जलती होली, मैना मुस्कराकर बोली ।
ये पैटर्न पुराना है, अब तो नया जमाना है ।
इंटरनेट पर चोट करो, अच्छी फ्रेंड कोई सेट करो ।
खाओ पीओ, ऐश करो, यदि चांस मिले रोमांस करो ।

तोता बोला, हे चरित्रहीन, लगती है, मुझको बुद्धिहीन।
बात ध्यान से सुन चपले, हरि नाम को तू जपले ।
वो बोली हे सन्त साधो, तुम हो मिटटी के माधो ।
बुढ़ापे में हरि को भजना, तब जंगल में तप करना ।
जीवन से लाभ उठा ले तू , व्यर्थ ये जीवन गंवाता क्यूँ ।

इसी तरह बाते करते बातो की नदियां बहते ।
दोनों का सम्पर्क हुआ, तभी अचानक अटैक हुआ ।
कनॉट प्लेस की सड़कों से, कुछ आवारा लडको ने ।
उडकर इंडिया गेट गये, हरी घास पर लेट गये ।
ठंडी ठंडी वात चली, फिर लव मैरिज की बात चली

मैना ने कहा यू लव मी, तोता बोला तू लव मी ।
अपने घर में जेठा हूँ और पंडित का बेटा हूँ ।
तू किस कुल की बाला है, किसने तुझको पाला है ।
मैना ने महसूस किया खुद को इन्टरोडयूस किया ।
मम्मी मेरी कोर्ट गयी, लेकर डाईवोर्स आई ।
पापा छोड़ कर चले गये, भाव हमारे तले गये ।

तोता बोला मत हो उदास, अपने जीवन में रखो आस ।
बात उदासी की जमी नहीं, कुल में तेरे कमी नहीं ।
यदि मन अपना अच्छा है, तो दोनों का कुल अच्छा है ।
पुष्प कली सी खिलना तुम , सुबह आठ बजे मिलना तुम ।
अगले दिन का किस्सा है लव का अंतिम हिस्सा है ।
घंटों से वो खड़ा हुआ, एक डाल पर पड़ा हुआ ।
रख लिया कलेजे पर पत्थर, आखों में आंसू भरकर ।
देख रहा था इधर उधर, न जाने मैना गयी किधर ।

तभी किसी का कोमल सर, आ टिका तोते के कंधे पर ।
ओ माई डियर आई हेव कम, तोता बोला हट निर्मम ।
मैना सुन ये बुदक गयी, थोडा पीछे फुदक गयी ।
बोली इनोसेंट हो तुम, पागल सौ परसेन्ट हो तुम ।
लव का बिल्कुल ज्ञान नहीं, नारी का सम्मान नहीं ।
हंस कर फिर वापस लौटी, तोते को च्यूंटी काटी ।
भावों का दिल कैश किया, अपने दिल को पेश किया ।

सपने का लव सच कर दो, मेरे दिल को टच कर दो।
मेरे सपनों के राजा, गुस्सा छोड़ पास आजा।
आई एम व्हिसकी यू आर रम, तोता बोला सुन्दरतम।
मैना कुछ आगे सरकी, तोते की बाजू फड़की।
मन ही मन वो फूल गया, हिन्दी पढ़ना भूल गया ।
तोते ने कहा यू लवली, मेरे दिल की मधुर कली
व्हिसकी जैसी नीट हो तुम, हाय हाय कितनी स्वीट हो तुम ।

दिल्ली का मै तोता हूँ, कनाट पैलेस में रोता हूँ
यू आर पेरिस की बुलबुल, मैना बोली वंडरफुल ।
हिन्दी इंग्लिश एक हुए, दोनो के पंजे सेक हुए ।
हिन्दी भी अंग्रेज हुई, दिल की धड़कन तेज हुई ।
आई लव यू, एंड यू लव मी, या मैं लव तू, और तू लव मी ।
आओ मिल गुणगान करे, हिंदी का सम्मान करें ।
हिंदी का सम्मान करें, हिंदी का सम्मान करें ।❑

चौपाल का पीपल

–शान्ति प्रकाश 'जिज्ञासु'
हिन्दी अनुभाग
महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून

बरसों बाद आज गांव जाना हुआ। गांव की बस में बैठते ही सारा बचपन मानो सामने चलचित्र के रूप में दिखाई देने लगा। बस में चार घंटे का सफर कब खत्म हो गया पता ही नहीं चला। पांचवीं कक्षा के बाद ही पिताजी हम सभी को गांव से शहर ले आए थे। दादाजी बीमार रहते थे उनके चले जाने के बाद पिताजी ने मां से कहा गांव में खेती पाती में कुछ तो होता नहीं हैं, तुम दो बच्चों के साथ यहां क्या करोगी? आखिर पैसा तो शहर से ही आना है। नौकरी का क्या, तीन साल में ट्रांस्फर होते रहते हैं, क्यों न हम सभी एक साथ रहें और बच्चों को भी अच्छी शिक्षा दें। गांव में वैसे ही स्कूल घर से काफी दूर है, बच्चे खेलने कूदने में समय खराब करते है गांव में प्राईवेट स्कूल भी नहीं हैं। सरकारी स्कूलों में खानापूर्ति हैं। मास्टरजी ध्यान भी नहीं देते। बहनजी भी अपने कामों में लगी रहती है। बच्चों से ही बच्चों को पढ़वाते हैं उनका भी क्या दोष है स्कूल के आसपास उनके पसंद का कमरा भी नहीं मिलता, उनके बच्चे भी शहरों में ही पढ़ते हैं। वैसे भी उच्च शिक्षा व कोचिंग के लिए शहर ही जाना होता है, इसलिए पिताजी ने मां को शहर आने के लिए राजी कर लिया। शहर पहुंचे तो देखा पिताजी ने कॉलोनी में घर लिया हुआ था घर भी काफी बड़ा था। इस घर में हम मुश्किल से दो महीने रहे होंगे। पिताजी को सरकारी घर एलॉट हो गया। घर क्या अच्छा खासा बंगला था। क्योंकि पिताजी अफसर थे। हमें स्कूल में दाखिला दिलाने से पहले यह समझाया गया कि गांव की बोली भाषा यहां नहीं चलेगी साथ ही घर में भी कम ही बोलोगे तो अच्छा है। मैं बड़ा अवश्य था किन्तु मुझसे भी शुद्ध हिन्दी नहीं बोली जाती थी। मां तो गांव की ही ठहरी उसके बोलने में तो हिन्दी का एक शब्द भी ठीक से नहीं बोला जाता था। छोटा अभी स्कूल नहीं जाता था इसलिए उसे तो कोई परेशानी नहीं थी लेकिन हमारे बाहर आने–जाने, लोगों से मेलजोल रखने पर प्रतिबन्ध लगने लगे मां तो सारा दिन घर के काम के सहारे काट लेती थी। मुझे तो स्कूल के बाद दोस्तों के साथ खेलने जाना था। मैं धीरे धीरे हिन्दी पर अपनी पकड़ बनाने में कामयाब हो गया किन्तु पिताजी हम सबसे यह अपेक्षा करते थे कि हम सभी अंग्रेजी में भी बोले, क्योंकि मेरा दाखिला एक प्रतिष्ठित अंग्रेजी स्कूल में किया गया था। मैं अभी पांचवीं पास कर छठी में आया ही था, मैंने पिताजी से कहा गांव में तो अंग्रेजी नहीं पढ़ाते और जो पढ़ाते भी हैं तो वह इतनी अच्छी नहीं होती पिताजी ने डांट कर कहा तो क्या हुआ यहां कौन से सारे विषय अंग्रेजी में पढ़ाए जाते है ,और हैं भी तो क्या हुआ? ट्यशन किस काम आएगी मैंने बात कर ली है। कल शाम से ट्यूटर घर पर आएगा और दो घंटे अंग्रेजी ही पढ़ाएगा। खैर समय के साथ–साथ सब ठीक होने लगा। मैं पढ़ने में ठीक ही था। ट्यूशन से और अच्छा हो गया साथ ही रविवार को इंगलिश स्पीकिंग

ट्यूटर भी आता था ताकि मैं अंग्रेजी ठीक से बोल सकूं। इससे हमारे घर का माहौल बदल गया था किन्तु हिन्दी भी सीमित हो गयी। अंग्रेजों का जैसे माहौल बनाने की पूरी कोशिश पिताजी की ओर से की गई जिसमें वे सफल भी हुए। छोटा तो स्कूल ही दो तीन साल बाद गया इसलिए उसकी शुरूआत ही अंग्रेजी से हुई, उसकी बेस पहले ही मजबूत हो गई थी और अब तीन वर्ष बाद मेरी मां के स्वभाव में भी परिवर्तन दिखाई देने लगा था। पिताजी के डर से मां के रहन–सहन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। फिर भी हम दोनो का परिवेश तो गांव का था। गांव आज भी हमारे दिलों में बसा हुआ था। पिताजी की पढ़ाई लिखाई शहर में ही हुई थी इसलिए उन्हे गांव से ज्यादा लगाव नहीं था। दादा जी के ही कारण उन्हे गांव आना–जाना पड़ता था अब वह भी नहीं रहे। गांव में अपने परिवार में कोई शादी विवाह होता तो पिताजी अक्सर न्यौता ही भिजवाते थे, कभी बहुत जरूरी हुआ तो स्वयं जाते थे। हमारे कहने के बाद भी हमें गांव ले जाने में उन्होने कभी उत्साह नहीं दिखाया। हां, मां को कभी कभी गांव की याद आती है जिसमें मैं भी शामिल हो जाता था, किन्तु पिताजी के आते ही गांव की याद छूमंतर जैसी हो जाती थी, हम अपने अपने काम पर लग जाते थे।

आज बरसों बाद गांव जाना हुआ। शहर से रात भर का रेल का सफर था जो प्रातः जिला मुख्यालय में पहुंचते ही पूरा होता था, वहां से बस प्रातः आठ बजे निकलती है, अगर बस के लिए ठीक समय पर पहुंच गए तो ठीक है वर्ना आगे के लिए छोटी गाड़ी, जीप वगैरह मिलने में दिक्कत हो जाती थी। यदि बस नहीं मिली तो शाम तक इंतजार करना पड़ता था या फिर पैदल जाना पड़ता था। अब नई सड़क तो बनी है लेकिन उस पर बस समय से ही चलती थी। गांव जाने को करीब बारह किलोमीटर की पैदल यात्रा ही करनी पड़ती थी। जब बस से गांव के स्टेशन पर उतरा यहां का तो नजारा देख कर चौंक गया। पहले केवल एक दुकान हुआ करती थी जो गांव से शहर आने जाने वालों का एक मात्र विश्राम केन्द्र था, अब काफी दुकाने है अच्छा खासा बाजार हो गया है। बस से उतरते ही मैने सबसे पहले उस स्थान को प्रणाम किया, फिर चारों ओर नजर दौड़ाई, सारा नजारा देखकर मन प्रफुल्लित हुआ।

जहां जंगल था अकेले आने जाने में डर लगता था, वहां बहुत से घर बन चुके थे, अच्छी सड़क, कई दुर्लभ स्थानों तक जा चुकी थी किन्तु साधन उपलब्ध नहीं थे। मैंने यहां से पैदल चलने का निश्चय किया क्योंकि गांव से यहां तक पगडंडियों के रास्ते स्कूल जाने के लिए पैदल ही आया करते थे। शहर जाने का एकमात्र यही रास्ता था। तब गांव में बिजली सड़क तो क्या, पानी भी दूर से पैदल लाना पड़ता था। दुकान में बैठ कर एक गिलास चाय बनवाई, चाय का घूंट पीता रहा और सोचता रहा, क्या किया जाय। तभी बचपन की वे सारी पिक्चर चल पड़ी, जब दौड़ दौड़ कर सभी काम कर लेता था। थोड़ा उम्र ही तो ढली है। दिल वही है रास्ता वही है बस थोड़ा समय का फासला ही बीच में आया है। आज पैंतालीस वर्ष का हो चुका था गांव लगभग पूरे पैंतीस वर्ष बाद आना हुआ। मेरा बचपन यदि यहां न गुजरा होता तो शायद मैं भी आम शहरी की तरह नखरे करता, आराम की वस्तु उपलब्ध करवाता किन्तु मेरे बचपन का गांव मेंरे बचपन के वे रास्ते जिन्हें मेरे नन्हे पैरों ने रोज हंसते–खेलते पार किया था। वे सभी याद ताजा करने के लिए मैं आगे बढ़ने लगा पुराने

रास्ते, पगडंडियों को पार करता चला गया। काफी आगे आने के बाद देखता हूं तो कई स्थानों पर रास्ता बन्द है या फिर रास्ते में दीवार बना दी गई। कहीं सूखी झाड़ियां थी, कही स्वंय झाड़ जमीं थी, कहीं नया जंगल दस्तक दे रहा था। मेरे भीतर अपने गांव जाने का, अपनों से मिलने का बहुत जोश था। मैं भरी दोपहरी में सारी बाधाएं पार करता चला गया। पसीने से तर बतर प्यास से गला सूख रहा था। मैं हांफ रहा था, सांस फूल रही थी किन्तु मुझे मालूम था कि रास्ते में कई स्थानों पर बारह मास बहने वाले पानी के स्रोत थे जो दिखाई नहीं पड़ रहे थे, शायद वे सारे स्रोत सड़क बनने से धंस गए या पेड़ों के कटने अथवा बरसात कम होने से सूख गए होंगे। मैं प्यास को दिलासा दिलाता हुआ आगे बढ़ता चला जा रहा था किन्तु भरी दोपहरी मेरे आगे बढ़ने में रूकावट पैदा कर रही थी। मुझे मालूम था कि रास्ते में एक बहुत बड़ा पीपल का पेड़ था, उसके चारों ओर चौंथरी यानी गांव की चौपाल थी। सुन्दर, साफ–सुथरी व उसके बड़े–बड़े पत्थर भी चमकते रहते थे। वहां पर आने जाने वाले लोग अक्सर बैठ कर अपनी थकान मिटाते थे, पानी पी कर सुस्ता कर ही आगे बढ़ते थे, वह पानी तो अवश्य बह रहा होगा। तभी दूर से मुझे पीपल के पेड़ के दर्शन हुए मैं पीपल के पेड़ को लक्ष्य बना कर झाड़ी, घास और चुभने वाले कांटों के बीच किसी तरह आगे बढ़ता चला गया, यहां रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। मैं अंदाज से पुराने रास्ते के अवशेष के सहारे पीपल के पास पहुंचा तो वहां का नजारा देख कर दंग रह गया। सारी चौपाल घास झाडियों से अटी पड़ी थी कुछ बेलें तो पीपल तक जा पहुचीं थी।

मैंने घास हटा कर थोड़ी जगह बना ली और अपना बैग चौंथरी/चौपाल की दीवार पर उतार कर रख दिया और पानी की तलाश में निकला, काफी मशक्कत के बाद पानी से गीली मिटटी दिखने लगी। धीरे–धीरे पानी की गुड–गुड/कल कल की आवाज भी आने लगी किन्तु पानी अपने पुराने यौवन में नहीं था बहुत धीमा स्वर था क्योंकि इस रास्ते अब कोई आता जाता नहीं था इसलिए पानी जितना बह रहा था वह मिटटी में समा रहा था लेकिन पानी आज भी मौजूद था मैं बहुत प्यासा था। मैंने पानी के बहाव के लिए थोड़ी जगह बनाई, मिटटी को लकड़ी से खोद कर पानी जमा होने के लिए गड्ढा सा बनाया, थोड़ी देर इंतजार किया जब मिट्टी नीचे बैठ गयी तो साफ पानी दिखने लगा। मैंने अंजुरी भर–भर कर भरपेट पानी पीया और मुंह धोकर, ताजगी लेकर पीपल की चौंथरी पर आ गया और थोड़ी सी जगह बना कर दीवार के सहारे बैठ गया, धीरे–धीरे पसर गया और पीपल की चौपाल के चौड़े से पत्थर पर लेट गया। मैं धीरे–धीरे उस अतीत में खोता चला गया जब कभी यहां पर बैठने को जगह नहीं मिलती थी क्योंकि अक्सर उम्रदराज लोग ही यहां पर बैठते थे। बड़ी समस्याओं पर चर्चाएं होती थी। गांव के सभी लोगों की कुशल छेम, जवान हो रहे लड़की–लड़कों के रिश्ते की बातें, उनके कामकाज की बातें, गाय, भैंस, बैल बेचने खरीदने, दूध देने, उनकी बीमारी, खेत खलियानों की, फसलों की चर्चाए, गांव के विकास, यहां तक कि राजनीति पर भी बहुत गहमा गहमी होती थी। छोटे बच्चों को तो बैठने का अवसर ही नहीं मिलता था। बच्चों को कहा जाता था ''जाओ भागों यहां से, उधर खेलो'' कह कर भगा दिया जाता था। हां कभी दादा जी का कुर्ता पकड़ कर रोते हुए पहुंच जाता तो चौपाल में बैठने का पूरा अवसर अवश्य मिल जाता था। वे भी क्या दिन थे, कि यहां से

आते–जाते लोग अपने सिर पर रखे अनाज, घास का बोझ चबूतरे पर रख कर सुस्ता लेते थे, अपने सुख–दुख की बातें करते थे, गर्मी से बचने के लिए पीपल की छांव में बैठ जाते थे, कभी कभी गहन चर्चा में इतने व्यस्त हो जाते थे कि जब तक कोई जरूरी काम न हो, उठते ही नहीं थे। गांव के कई लोगों के झगड़े यहीं बैठ कर सुलझाए जाते थे और थोड़ा सुस्ता लेने के बाद लोग अपने–अपने गंतव्य को निकल पड़ते थे। पीपल की टहनियां मंद–मंद हवा किए जा रही थी मानो मां अपनी घोती के आंचल से पंखा झाल रही हो और मैं यह सोचते–सोचते मीठी नींद की गइराई में डूब गया। जाने कब मेरी आंख लग गई पता ही नहीं चला। दोपहर ढल चुकी थी हल्की पुरवाई चलने लगी थी कि अचानक एक पीपल का पत्ता मेरे चेहरे पर आ गिरा, मैं आंख मलने लगा, मानो मुझे कोई जगा रहा हो और कह रहा हो ''बेटा उठ जाओ, समय अधिक हो गया है। अभी तुम्हें बहुत दूर जाना है। फिर जब भी अवसर मिले तो जरूर आना ये चौपाल तुम्हारे दादाओं और परदादाओं ने ही बनाई है। एक पेड़ पीपल का न जाने कहां से लाए थे बस, सही स्थान देखकर लगा दिया था। इसकी देख–रेख करते रहे, सींचते रहे, इसके चारों ओर लकड़ी की डंडियां लगाते रहे, जैसे ही मुझ पर कोंपले फूटी तो जानवरों से बचाने के लिए मेरे चारों ओर पत्थर लगाते रहे जो बाद में मेरी–चौंथरी/चौपाल बन गयी और उनकी थकान दूर करने का साधन भी बना। बेटा, मैंने देखे हैं तुम्हारे पूर्वजों के पैरों की विवाइंया, उनके हाथों के छालों को, कंधे पर बोझ उठाने के निशानों को, मैंने देखा है उनके शरीर की थकान को, अगर लेट गए तो तुरंत गहरी नींद में सो गए, उठे तो अपने काम के लिए चल पड़े। मुझे मालूम है किस वर्ष कितना अनाज खेतों में पैदा हुआ। क्योंकि सारे बोरे मेरी ही मुंढेर पर रखे जाते थे। मैंने देखा है उन महिलाओं की मजबूरी को, जिस धोती में नहाती थी उसी धोती को, धो कर, सुखा कर पहनती थी। मैंने देखा है तुम्हारे दादाओं के पैजामों पर सिली हुई टल्लियों को, मैंने सुना है उनके दुख–दर्द को, हंसी ठिठोली को। मुझे, खुशी है आज उनका अच्छा विकास हो गया है। सभी धनवान हो गए हैं। बेटा गांव में अब लोग है ही कितने, जो हैं भी वे सड़क बनने से सरपट चले जाते है, कुछ लोग शहरों में बस गए हैं और बाकी सड़क के किनारे। इस रास्ते अब आता ही कौन है। तुम आए, अच्छा लगा। आना फिर आना, इस गांव ने तुम्हारे बचपन की सभी यादें संजो कर रखी हैं।

मैंने अपने चारों ओर नजर दौड़ाई तो यह दृश्य देखकर मैं चौंक पड़ा। सुनसान, वीरान कोई आस न पास। मंद–मंद हवा की र्दम। चिड़ियों की चहचहाट, उनके उड़ने की आवाज बस।

मैं कहां हूं? स्वयं को व्यवस्थित किया। समय काफी हो चुका था। मैंने अपना बैग उठाया और उस चौपाल– चौंथरी को प्रणाम कर गांव की ओर चल पड़ा।❑

महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन एक संक्षिप्त रिपोर्ट।

-श्रीमती सरोज बलूनी
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
महासर्वेक्षक का कार्यालय देहरादून।

महासर्वेक्षक का कार्यालय में भारत सरकार के राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मुख्यालय सहित 15 भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र/ निदेशालय/ मुद्रण वर्ग 'क' क्षेत्र में, 06 भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र 'ख' क्षेत्र में तथा 20 भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्र/ प्रशिक्षण संस्थान/निदेशालय/मुद्रण वर्ग 'ग' में स्थित हैं। वर्ष 2021-2022 में विभाग में हिंदी के प्रयोग की स्थिति निम्नवत् रही :-

पत्राचार

वर्ष 2021-2022 के दौरान संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए विभाग के विभिन्न कार्यालयों में सघन उपाय किए गए। राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत 6353 कागजात द्विभाषी जारी किए गए। हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया गया। हिंदी पत्राचार की क्षेत्रवार स्थिति निम्नवत् रही :-

1)	'क' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों द्वारा हिंदी में किया गया पत्राचार	-	80.8%
2)	'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों द्वारा हिंदी में किया गया पत्राचार	-	91.8%
3)	'ग' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों द्वारा हिंदी में किया गया पत्राचार	-	47.3%

हिंदी कार्यशाला / संगोष्ठी / सम्मेलन

रिपोर्टाधीन अवधि में विभाग के विभिन्न कार्यालयों में राजभाषा संबंधी आदेशों/नियमों तथा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की जानकारी देने के लिए 07 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में 53 अधिकारियों/कर्मचारियों ने प्रशिक्षण लिया।

प्रोत्साहन योजना

वर्ष 2021-2022 के दौरान सरकारी कामकाज मूलरूप से हिंदी में करने के लिए टिप्पण और आलेखन, हिंदी टाइपिंग और हिंदी आशुलिपि की प्रोत्साहन योजनाएं लागू रहीं।

हिंदी दिवस/पखवाड़ा/समारोह का आयोजन

वर्ष के दौरान विभाग के विभिन्न कार्यालयों में सितम्बर माह में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा/हिंदी समारोह मनाया गया। हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए इस अवसर पर हिंदी विषयक विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

भारत के महासर्वेक्षक कार्यालय, देहरादून में हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए जे०सी०एम० एवं कार्य अध्ययन एकक अनुभाग को चल वैजयंती शील्ड प्रदान की गई।

हिंदी में गृह-पत्रिका का प्रकाशन

रिपोर्टाधीन अवधि में निम्नलिखित कार्यालयों द्वारा हिंदी में गृह-पत्रिका प्रकाशित की गई :-

1) महासर्वेक्षक का कार्यालय, देहरादून - सर्वेक्षण दर्पण (18 - अंक)
2) न० रा० का० समिति (का०1), देहरादून - दूनवाणी अंक-10
3) राष्ट्रीय भू स्थानिक आंकड़ा-केन्द्र, देहरादून - उज्याऊ
4) ज्योडीय एवं अनुसंधान शाखा, देहरादून - झलक
5) मध्य प्रदेश भू स्थानिक आंकड़ा केन्द्र, जबलपुर - धरोहर
6) भौ०सू०प० और सु०सं०नि०, हैदराबाद - पुष्पांजलि
7) आंध्र प्रदेश एवं तेलंगाना जीडीसी, हैदराबाद - कलाकल
8) दक्षिणी मुद्रण वर्ग, हैदराबाद - प्रेरणा
9) पश्चिमी बंगाल एवं सिक्किम जीडीएी, कोलकाता - सर्वेक्षण परिवार

बैठकें

वर्ष 2021-2022 के दौरान विभाग के 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों में स्थित लगभग सभी भू-स्थानिक आंकड़ा केन्द्रों/निदेशालयों आदि में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में संघ का राजकीय कार्य हिंदी में करने के लिए सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए विचार-विमर्श किया गया।

वर्ष के दौरान भारत के महासर्वेक्षक की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्या०1), देहरादून की छमाही बैठकों का आयोजन किया गया।

' मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती।
भगवान भारतवर्ष में गूँजे हमारी भारती।'
- मैथिलीशरण गुप्त।

हिंदी विषयक प्रतियोगिताओं का आयोजन

महासर्वेक्षक कार्यालय में 01 सितम्बर से 08 सितम्बर, 2021 तक आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नवत् है :-

1	**<u>हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :</u>** **(ग्रुप 'ए' अधिकारियों के लिए)**		
1)	श्री मोहन राम, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	प्रथम
2)	श्री उपकार पाठक, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	प्रथम
3)	श्री प्रशांत कुमार, उप महासर्वेक्षक	-	द्वितीय
4)	श्री सिद्धांत सेन, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	तृतीय
5)	श्री मिसाल रोशन श्रीवास्तव, अधीक्षक सर्वेक्षक	-	प्रोत्साहन
6)	श्री प्रदीप सिंह, उप निदेशक	-	प्रोत्साहन
2	**<u>हिन्दी निबंध :</u>**		
1)	श्री सुरेन्द्र सिंह असवाल, सहायक, जे०सी०एम० अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री जय सिंह, सर्वेक्षण सहायक, तकनीकी अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री भगवान सिंह भण्डारी, अवर श्रेणी लिपिक, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री रणजीत सिंह, सहायक, स्थापना-1 अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री राजीव कुमार वर्मा, सहायक, सतर्कता अनुभाग	-	प्रोत्साहन
3	**<u>हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :</u>** **(तकनीकी संवर्ग के लिए)**		
1)	श्री तेजवीर सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक तकनीकी अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री तपेश शर्मा, मानचित्रकार - I, तकनीकी अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री नदीम अहमद, अधिकारी सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री नवीन कुमार शर्मा, सर्वेक्षक, तकनीकी अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्रीमती सुनीता जुत्शी, मानचित्रकार - I, जी०आई०एस०टी०सी०	-	प्रोत्साहन

क्रमश:.....

4	**<u>हिन्दी में टिप्पण और आलेखन :</u>** **(मिनिस्टीरियल संवर्ग के लिए)**		
1)	श्री राजीव कुमार वर्मा, सहायक, सतर्कता अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री विनोद मिश्रा, सहायक, विधिक सैल	-	द्वितीय
3)	श्री मुनीश कोहली, सहायक, स्थापना-1 अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री दीपक कुमार, सहायक, गोपनीय अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री राजेश सिंह, सहायक, स्थापना -1 अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5	**<u>हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) :</u>** **(ग्रुप 'सी' पूर्व में ग्रुप 'डी' के लिए)**		
1)	श्री विकास शर्मा, एम०टी०एस०, भण्डार अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री अरविन्द राजपूत, एम०टी०एस०, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री मनीष कुमार दॉगी, एम०टी०एस०, तकनीकी अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री शुभम सैनी, एम०टी०एस०, तकनीकी अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्री आजाद कुमार, एम०टी०एस०, विधिक अनुभाग	-	प्रोत्साहन
6	**<u>कंप्यूटर पर हिन्दी में वर्ड प्रोसेसिंग :-</u>**		
1)	श्री राजेश सिंह, सहायक, स्था०-1 अनुभाग	-	प्रथम
2)	श्री अनुज कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक, स्था० प्रशा० एवं वेतन अनुभाग	-	द्वितीय
3)	श्री बचन सिंह, अवर श्रेणी लिपिक, आर०टी०आई, अनुभाग	-	तृतीय
4)	श्री राकेश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक, स्थापना-3 अनुभाग	-	प्रोत्साहन
5)	श्रीमती नीति वर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक, विनियम अनुभाग	-	प्रोत्साहन

❋ ❋ ❋

महासर्वेक्षक कार्यालय में स्वतंत्रता दिवस

माननीय श्री गिरीराज सिंह, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री, भारत सरकार का महासर्वेक्षक कार्यालय में आगमन ।

महासर्वेक्षक कार्यालय में आयोजित हिन्दी कार्याशाला में उपस्थित प्रतिभागी

महासर्वेक्षक कार्यालय में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां

राष्ट्रीय सर्वेक्षण दिवस समारोह की झलकियां

महासर्वेक्षक, कार्यालय परिसर में वृक्षारोपण

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सामुदायिक केन्द्र में विश्व योग दिवस

खुशाल सिंह नेगी

कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

10 सितम्बर 1964 - 24 अगस्त 2022

प्रात: जगाता शिशु वसंत को नव गुलाब दे-दे ताली,
तितली बनी देव की कविता वन-वन उड़ती मतवाली।
सुंदरता को जगी देखकर जी करता मैं भी कुछ गाऊँ,
मैं भी आज प्रकृति-पूजन में निज कविता के दीप जलाऊँ।
ठोकर मार भाग्य को फोड़ें, जड़ जीवन तजकर उड़ जाऊँ,
उतरी कभी न भू पर जो छवि, जग को उसका रूप दिखाऊँ।
स्वप्न-बीच जो कुछ सुंदर हो, उसे सत्य में व्याप्त करूँ,
और सत्य-तनु के कुत्सित मल का अस्तित्व समाप्त करूँ।